फरिश्ते अर्थात्.....

अव्यक्त बापदादा

१. फ़रिश्ते अर्थात् सब बातों में हल्के
२. फ़रिश्ते अर्थात् अभी-अभी आया और गया
३. फ़रिश्ते अर्थात् सूक्ष्मवतनवासी
४. फ़रिश्ते अर्थात् साक्षात्कारमूर्त्त और साक्षात्मूर्त्त
५. फरिश्ते अर्थात् सब में फुल
६. फरिश्ते अर्थात् ऊपर की स्थिति में स्थित रहने वाले
७. फ़रिश्ते अर्थात् अधिकारी
८. फ़रिश्ते अर्थात् कर्म वा गुणों का दान करने वाले
९. फ़रिश्ते अर्थात् मन, वचन, कर्म से सरल
१०. फ़रिश्ते अर्थात् हर कर्त्तव्य करते बाप की याद में उड़ने वाले
११. फ़रिश्ते अर्थात् सारे विश्व का चक्र लगाने वाले
१२. फ़रिश्ते अर्थात् कर्म करते हुए कर्मातीत
१३. फ़रिश्ते अर्थात् दूसरों की इच्छाओं को पूर्ण करने वाले
१४. फ़रिश्ते अर्थात् शीश महल में रहने वाले
१५. फ़रिश्ते अर्थात् लाइट के कार्ब में रहने वाले
१६. फ़रिश्ते अर्थात् अव्यक्त स्थिति की लाइट के अन्दर हर एक्ट करने वाले
१७. फ़रिश्ते अर्थात् निरन्तर नैचुरल डांस करने वाले
१८. फ़रिश्ते अर्थात् जिसका आत्माओं से भी कोई रिश्ता नहीं
१९. फ़रिश्ते अर्थात् अन्त:वाहक शरीर द्वारा चक्कर लगाने वाले
२०. फ़रिश्ते अर्थात् सिद्धि-पुरुष
२१. फ़रिश्ते अर्थात् ज़रा भी मेरापन में नहीं रहने वाला
२२. फ़रिश्ते अर्थात् अथक और सबकुछ बाप के हवाले करने वाले
२३. फरिश्ते अर्थात् प्रकट होने वाले और समा जाने वाले

२४. फ़रिश्ते अर्थात् सदा शुभ चिन्तक और सदा निश्चिन्त

२५. फ़रिश्ते अर्थात् सर्व को ऊँची मंज़िल पर ले जाने वाले

२६. फ़रिश्ते अर्थात् भक्तों को और वैज्ञानिकों को टचिंग कराने वाले

२७. फ़रिश्ते अर्थात् बापदादा समान और सम्पन्न

२८. फ़रिश्ते अर्थात् साकार बाप को फ़ालो करने वाले

२९. फरिश्ते अर्थात् बापदादा समान और सम्पन्न

३०. फ़रिश्ते अर्थात् सफेद वस्त्रधारी और सफेद लाइटधारी

३१. फरिश्ते अर्थात् सदा देही-अभिमानी

३२. फ़रिश्ते अर्थात् फ़्लाईंग सॉसर जैसे चारों ओर दिखाई पड़ने वाले

३३. फ़रिश्ते अर्थात् अपने फ्युचर द्वारा अन्य आत्माओं के फ्युचर बनाने वाले

३४. फ़रिश्ते अर्थात् अथक और सबकुछ बाप के हवाले करने वाले

३५. फ़रिश्ते अर्थात् ज्योति की काया वाले

३६. फ़रिश्ते अर्थात् बेहद में रहने वाले

३७. फ़रिश्ते अर्थात् जिसका धरनी से कोई रिश्ता नहीं

३८. फ़रिश्ते अर्थात् कर्मातीत अवस्था वाले

३९. फ़रिश्ते अर्थात् साक्षात्कार कराने वाले

४०. फ़रिश्ते अर्थात् इच्छा मात्रम अविद्या

मीठे बच्चे, अपने चलन और चेहरे से फ़रिश्ते स्वरूप को प्रत्यक्ष करो !

''बापदादा नवीनता देखने चाहते हैं। सब अच्छे हो, विशेष भी हो, महान भी हो लेकिन बाप की प्रत्यक्षता का आधार है– साधारण कार्य में रहते हुए भी फ़रिश्ते की चाल और हाल हो। बापदादा यह नहीं देखने चाहते कि बात ऐसी थी, काम ऐसा था, सरकमस्टांश ऐसे थे, समस्या ऐसी थी, इसीलिए साधारणता आ गई। फ़रिश्ता स्वरूप अर्थात् स्मृति स्वरूप में हो, साकार रूप में हो। सिर्फ़ समझने तक नहीं, स्मृति तक नहीं, स्वरूप में हो। ऐसा परिवर्तन, किसी समय भी, किसी हालत में भी अलौकिक स्वरूप अनुभव हो। ऐसे है या थोड़ा बदलता है? जैसी बात वैसे अपना स्वरूप नहीं बनाओ। बात आपको क्यों बदले, आप बात को बदलो। बोल आपको बदले या आप बोल को बदलो। परिवर्तन किस को कहा जाता है? प्रैक्टिकल लाइफ का सैम्पल किसको कहा जाता है? जैसा समय, जैसा सरकमस्टांश वैसे स्वरूप बने– यह तो साधारण लोगों का भी होता है। लेकिन फ़रिश्ता अर्थात् जो पुराने या साधारण हाल-चाल से भी परे हो। अभी आपकी टॉपिक है ना– समय की पुकार। तो अभी समय की पुकार आप विशेष महान आत्माओं के प्रति यही है कि अभी फ़रिश्ता अर्थात् अलौकिक जीवन स्वरूप में दिखाई दे।

नये वर्ष में यह समान बनने का दृढ़ संकल्प करो। लक्ष्य रखो कि हमें फ़रिश्ता बनना ही है। अब पुरानी बातों को समाप्त करो। अपने अनादि और आदि संस्कारों को इमर्ज करो। स्मृति में रखो– चलते-फिरते मैं बाप समान फरिश्ता हूँ, मेरा पुराने संस्कारों से, पुरानी बातों से कोई रिश्ता नहीं। समझा? इस परिवर्तन के संकल्प को, जैसे बीज को पानी देते रहते हैं ना, तो फल निकलता है। पानी भी चाहिए, धूप भी चाहिए तो इस संकल्प को, बीज को स्मृति का पानी और धूप देते रहना। बार-बार रिवाइज करो– मेरा बापदादा से वायदा क्या है! अच्छा।''

–अव्यक्त बापदादा

फ़रिश्ते अर्थात् सब बातों में हल्के

जब हरेक की नेचर बदले तब आप लोगों के अव्यक्ति पिक्चर्स बनेंगे। संगमयुग की सम्पूर्ण स्टेज की पिक्चर क्या है? (फ़रिश्ते) फ़रिश्ते में क्या विशेषता होती है? एक तो बिल्कुल हल्कापन होता है। हल्कापन होने के कारण जैसी भी परिस्थिति हो वैसी अपनी स्थिति बना सकेंगे। जो भारी होते हैं वह कैसी भी परिस्थिति में अपने को सेट नहीं कर सकेंगे। तो **फ़रिश्तेपन की मुख्य विशेषता हुई कि वह सभी बातों में हल्के होंगे– संकल्पों में भी हल्के, वाणी में भी हल्के और कर्म करने में भी हल्के और सम्बन्ध में भी हल्के रहेंगे।** इन चार बातों में हल्कापन है तो फ़रिश्ते की अवस्था है। अब देखना है– कहाँ तक इन ४ बातों में हल्कापन है। जो हल्के होंगे वे एक सेकेण्ड में कोई भी आत्मा के संस्कारों को परख सकेंगे और जो भी परिस्थिति सामने आयेंगी उनको एक सेकेण्ड में निर्णय कर सकेंगे। यह है फ़रिश्तेपन की परख। जब यह सभी गुण हर कर्म में प्रत्यक्ष दिखाई दें तो समझना अब सम्पूर्ण स्टेज नज़दीक है।

फ़रिश्ते अर्थात् अभी-अभी आया और गया

अभी अलबेलेपन का समय नहीं है। बहुत समय अलबेला पुरुषार्थ किया। अब जो किया सो किया। फिर यह स्लोगन याद दिलायेंगे जो आप लोग औरों को सुनाते हो– 'अब नहीं तो कब नहीं'। अगर अब न करेंगे तो फिर

कब करेंगे? फिर कब हो नहीं सकेगा। इसलिए स्लोगन भी याद रखना। हर दिन का अलग-अलग अपने प्रति स्लोगन भी सामने रख सकते हो। जैसे यह स्लोगन है कि 'जो कर्म मैं करूँगा मुझे देख और करेंगे'। इस रीति दूसरे दिन फिर दूसरा स्लोगन सामने रखो। जैसे बापदादा ने सुनाया कि 'सफलता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'। यह भी सुनाया था कि 'मिटेंगे लेकिन हटेंगे नहीं'। इसी प्रकार हर रोज़ का कोई न कोई स्लोगन सामने रखो और उस स्लोगन को प्रेक्टिकल में लाओ। फिर देखो अव्यक्त स्थिति कितनी जल्दी हो जाती है! **फ़रिश्तों को फ़र्श की कभी आकर्षण नहीं होती है। अभी-अभी आया और गया। कार्य समाप्त हुआ फिर ठहरते नहीं। आप लोगों ने भी कार्य के लिए व्यक्त का आधार लिया, कार्य समाप्त किया फिर अव्यक्त एक सेकेण्ड में। यह प्रैक्टिस हो जाये फिर फ़रिश्ते कहलायेंगे।**

फ़रिश्ते अर्थात् सूक्ष्मवतनवासी

अव्यक्त में सर्विस कैसे होती है– यह अनुभव होता जाता है? अव्यक्त में सर्विस का साथ कैसे सदैव रहता है– यह भी अनुभव होता है? जो वायदा किया है कि स्नेही आत्माओं के हर सेकेण्ड साथ ही हैं, ऐसे सदैव साथ का अनुभव होता है? सिर्फ रूप बदला है लेकिन कर्त्तव्य वही चल रहा है। जो भी स्नेही बच्चे हैं उन्हों के ऊपर छत्र रूप में नज़र आता है। छत्रछाया के नीचे सभी कार्य चल रहा है– ऐसी भासना आती है। व्यक्त से अव्यक्त, अव्यक्त से व्यक्त में आना यह सीढ़ी उतरना और चढ़ना जैसे आदत पड़ गई है। अभी-अभी वहाँ, अभी-अभी यहाँ। जिसकी ऐसी स्थिति हो जाती है, अभ्यास हो जाता है उसको यह व्यक्त देश भी जैसे अव्यक्त भासता है। स्मृति और दृष्टि बदल जाती है। सभी एवररेडी बन कर बैठे हुए हो? कोई भी देह के हिसाब-किताब से भी हल्का। वतन में शुरू-शुरू में पंछियों का खेल दिखलाते थे, पंछियों को उड़ाते थे। वैसे यह आत्मा भी पंछी है जब चाहे तब उड़ सकती है। वह तब हो सकता है जब अभ्यास हो। जब खुद उड़ता पंछी बनें तब औरों को भी एक सेकेण्ड में उड़ा सकते हैं। अभी तो समय लगता है। अपरोक्ष रीति से वतन का अनुभव बताया। अपरोक्ष रूप से कितना समय वतन में साथ रहते हो? जैसे इस वक्त जिसके साथ स्नेह होता है, वह कहाँ विदेश में भी है तो उनका मन ज़्यादा उस तरफ़ रहता है। जिस देश में वह होता है उस देश का वासी अपने को समझते हैं। वैसे ही तुमको अब सूक्ष्मवतनवासी बनना है। सूक्ष्मवतन को स्थूलवतन में इमर्ज करते हो वा खुद सूक्ष्मवतन में साथ समझते हो? क्या अनुभव है? सूक्ष्मवतनवासी बाप को यहाँ इमर्ज करते हो वा अपने को भी सूक्ष्मवतनवासी बना कर साथ रहते हो? बापदादा तो यही समझते हैं कि स्थूल वतन में रहते भी सूक्ष्मवतनवासी बन जाते। यहाँ भी जो बुलाते हो, यह भी सूक्ष्मवतन के वातावरण में ही सूक्ष्म से सर्विस ले सकते हो। **अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर मदद ले सकते हो। व्यक्त रूप में अव्यक्त मदद मिल सकती है। अभी ज़्यादा समय अपने को फ़रिश्ते ही समझो। फ़रिश्तों की दुनिया में रहने से बहुत ही हल्कापन अनुभव होगा जैसे कि सूक्ष्मवतन को ही स्थूलवतन में बसा दिया है। स्थूल और सूक्ष्म में अन्तर नहीं रहेगा।** तब सम्पूर्ण स्थिति में भी अन्तर नहीं रहेगा। यह व्यक्त देश जैसे अव्यक्त देश बन जायेगा। सम्पूर्णता के समीप आ जायेंगे। जैसे बापदादा व्यक्त में आते भी हैं तो भी अव्यक्त रूप के अव्यक्त देश की अव्यक्ति प्रवाह में रहते हैं। वही बच्चों को अनुभव कराने लिए आते हैं। ऐसे आप सभी भी अपने अव्यक्त स्थिति का अनुभव औरों को कराओ। जब अव्यक्त स्थिति की स्टेज सम्पूर्ण होगी तब ही अपने राज्य में साथ चलना होगा। एक आँख में अव्यक्त सम्पूर्ण स्थिति दूसरी आँख में राज्य पद। ऐसे ही स्पष्ट देखने में आयेंगे जैसे साकार रूप में दिखाई पड़ता है। बचपन रूप भी और सम्पूर्ण रूप भी। बस यह बन कर फिर यह बनेंगे। यह स्मृति

रहती है। भविष्य की रूप-रेखा भी जैसे सम्पूर्ण देखने में आती है। जितना-जितना फ़रिश्ते लाइफ के नज़दीक होंगे उतना-उतना राजपद को भी सामने देखेंगे। दोनों ही सामने। आजकल कई ऐसे होते हैं जिनको अपने पास्ट की पूरी स्मृति रहती है। तो यह भविष्य भी ऐसे ही स्मृति में रहे– यह बनना है। वह भविष्य के संस्कार इमर्ज होते रहेंगे। मर्ज नहीं इमर्ज होंगे। अच्छा।

फ़रिश्ते अर्थात् साक्षात्कारमूर्त्त और साक्षात्मूर्त्त

ब्राह्मणों को त्रिमूर्त्ति शिव वंशी कहते हो ना? त्रिमूर्त्ति बाप के बच्चे स्वयं भी त्रिमूर्त्ति हैं। बाप भी त्रिमूर्त्ति है। जैसे बाप त्रिमूर्त्ति है वैसे आप भी त्रिमूर्त्ति हो? तीन प्रकार की लाइट्स साक्षात्कार की आती हैं? वह मालूम है कौन-सी हैं जो ब्राह्मणों के तीन प्रकार की लाइट्स साक्षात्कार होते रहते हैं? आप लोगों से लाइट का साक्षत्कार होता मालूम पड़ता है? त्रिमूर्त्तिवंशी त्रिमूर्त्ति बच्चों की तीन प्रकार की लाइट्स का साक्षत्कार होता है। वह कौन-सी लाइट्स हैं? एक तो लाइट का साक्षत्कार होता है नयनों से। कहते हैं ना कि **नयनों की ज्योति**! नयन ऐसे दिखाई पड़ेंगे जैसे नयनों में दो बड़े बल्ब जल रहे हैं। दूसरी होती है **मस्तक की लाइट**। तीसरी होती है **माथे पर लाइट का क्राउन**। अभी यह कोशिश करना है जो तीनों ही लाइट्स का साक्षात्कार हो। कोई भी सामने आये तो उनको यह नयन बल्ब दिखाई पड़ें। ज्योति ही ज्योति दिखाई दे। जैसे अन्धियारे में सच्चे हीरे चमकते हैं ना? जैसे सर्च लाइट होती है बहुत फोर्स से और अच्छी रीति फैलाते हैं इस रीति से मस्तक के लाइट का साक्षात्कार एक-एक से होना है। तब कहेंगे यह तो जैसे फ़रिश्ता है। साकार में नयन, मस्तक और माथे के क्राउन के साक्षात्कार स्पष्ट होंगे। नयनों तरफ़ देखते देखते लाइट देखेंगे। तुम्हारी लाइट को देख दूसरे भी जैसे लाइट हो जायेंगे। कितना भी मन से वा स्थिति में भारीपन हो लेकिन आने से ही हल्का हो जाये। ऐसी स्टेज अब पकड़नी है। क्योंकि आप लोगों को देख कर और सभी भी अपनी स्थिति ऐसी करेंगे। अभी से ही अपना गायन सुनेंगे। द्वापर का गायन कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन ऐसे साक्षात्कारमूर्त्त और साक्षात् मूर्त्त बनने से अभी का गायन अपना सुनेंगे। आप के आगे आने से लाइट ही लाइट देखने में आये। ऐसे होना है। मधुबन ही लाइट का घर हो जायेगा। यह दीवे आदि देखते भी जैसे कि नहीं देखेंगे। जैसे वतन में लाइट ही लाइट देखने में आती है वैसे यह स्थूल वतन लाइट का हाउस हो जायेगा। जब आप चैतन्य लाइट हाउस हो जायेंगे तो फिर यह मधुबन भी लाइट हाउस हो जायेगा। अभी यह है लास्ट पढ़ाई की लास्ट सब्जेक्ट प्रैक्टिकल (ॅ्रूम्त) में। थ्योरी (ूपदेब) का कोर्स समाप्त हुआ। प्रैक्टिकल कोर्स की लास्ट सब्जेक्ट है। इस लास्ट सब्जेक्ट में बहुत फास्ट (ॣ) पुरुषार्थ करना पड़ेगा। इसी स्टेज के लिए गायन है।

फरिश्ते अर्थात् सब में फुल

आज बापदादा सभी स्टूडेन्ट्स की पढ़ाई के बाद क्या-क्या डिग्री प्राप्त की है वह देख रहे हैं। इस पढ़ाई की डिग्री कौन-सी मिलती है? इस संगमयुग पर आपको क्या मिलेगा? सम्पूर्ण फ़रिश्ता व अव्यक्त फ़रिश्ता। यह है संगमयुग की डिग्री और देवपद है भविष्य की प्रारब्ध। तो अब की डिग्री है सम्पूर्ण अव्यक्त फ़रिश्ता। इस डिग्री की मुख्य क्वालीफिकेशन कौन-कौन सी हैं और कहाँ तक हरेक स्टूडेण्ट इसमें क्वालीफाइड बना है, यह देख रहे हैं। जितना क्वालीफाइड होगा उतना ही औरों को भी क्वालीफाइड बनायेगा। क्वालीफाइड जो होगा वह बनायेगा क्वालिटी और जो नहीं होगा वह बनायेगा क्वान्टिटी। तो आज सभी की क्वालिटीज देख रहे हैं। देखा जाता है ना कि किन-किन क्वालिटीज में क्वालीफाइड हैं! तो यहाँ मुख्य क्वालिटीज में एक तो देख रहे हैं कि कहाँ तक

नालेजफुल बने हैं। **नालेजफुल के साथ फेथफुल, सक्सेसफुल, पॉवरफुल और सर्विसएबुल** कहाँ तक बने हैं। इतनी क्वालिटीज अगर सभी में आ जायें तो फिर डिग्री मिल जायेगी। तो हरेक को यह देखना है कि इन क्वालिटीज में कौन-कौन सी क्वालिटीज धारण हुई हैं। नालेजफुल अर्थात् बुद्धि में फुल नालेज की धारणा। जितना नालेजफुल होगा उतना ही वह सक्सेसफुल होगा। अगर सक्सेसफुल कम हैं तो समझेंगे नालेज की कमी है। सक्सेसफुल न होने का कारण क्या है? फेथफुल कम। फेथफुल अर्थात् निश्चयबुद्धि। एक तो अपने में फेथ, दूसरा बापदादा में और तीसरा सर्व परिवार की आत्माओं में फेथफुल होना पड़ता है। जितना फेथफुल बन कर निश्चयबुद्धि होकर कोई कर्त्तव्य करेंगे तो निश्चयबुद्धि की विजय अर्थात् फेथफुल होने से सक्सेसफुल हो ही जाता है। उसका हर कर्त्तव्य, हर संकल्प, हर बोल पॉवरफुल होगा। ऐसे क्वालीफाइड को ही यह डिग्री प्राप्त हो सकती है। अगर डिग्री को प्राप्त नहीं करते तो क्या होता है मालूम है? कोर्ट द्वारा क्या निकलता है? डिक्री (नोटिस)। या तो डिग्री मिलेगी या तो डिक्री निकलेगी। धर्मराजपुरी में बन्द होने की डिक्री निकलेगी। इसलिए पुरुषार्थ करके डिग्री लेनी है, डिक्री नहीं निकालनी है। जिन्हों पर डिक्री निकलती है वह शर्मशार हो जाते हैं। इसलिए सदैव चेक करो कि कहाँ तक क्वालीफाइड बने हैं। यह तो मुख्य क्वालीफिकेशन बताई। लेकिन लिस्ट तो बड़ी लम्बी है। हर क्वालिटीज के पीछे फुल शब्द भी है। फेथफुल, पॉवरफुल...। तो इस रीति से सभी गुणों में फुल हैं तब डिग्री मिलेगी।

फरिश्ते अर्थात् ऊपर की स्थिति में स्थित रहने वाले

अभी जैसे समय की रफ़्तार चल रही है उसी प्रमाण अभी यह पाँव पृथ्वी पर न रहना चाहिए। कौन-सा पाँव? बुद्धि, जिससे याद की यात्रा करते हो। कहावत है ना कि **फ़रिश्तों के पाँव पृथ्वी पर नहीं होते। तो अभी यह बुद्धि पृथ्वी अर्थात् प्रकृति के आकर्षण से परे हो जायेगी, फिर कोई भी चीज़ नीचे नहीं ला सकती है। फिर प्रकृति को अधीन करने वाले हो जायेंगे, न कि प्रकृति के अधीन होने वाले।** जैसे साईन्स वाले आज प्रयत्न कर रहे हैं पृथ्वी से परे जाने के लिए। वैसे ही साइलेंस की शक्ति से इस प्रकृति के आकर्षण से परे, जब चाहें तब आधार लें, न कि प्रकृति जब चाहे तब अधीन कर दे। तो ऐसी स्थिति कहाँ तक बनी है? अभी तो बापदादा साथ चलने के लिए सूक्ष्मवतन में अपना कर्त्तव्य कर रहे हैं लेकिन यह भी कब तक? जाना तो अपने ही घर में है ना? इसलिए **अभी जल्दी-जल्दी अपने को ऊपर की स्थिति में स्थित करने का प्रयत्न करो।** साथ चलना, साथ रहना और फिर साथ में राज्य करना है ना? साथ कैसे होगा? समान बनने से। समान नहीं बनेंगे तो साथ कैसे होगा? अभी साथ उड़ना है, साथ रहना है– यह स्मृति रखो तब अपने को जल्दी समान बना सकेंगे। नहीं तो कुछ दूर पड़ जायेंगे। वायदा भी है ना कि साथ रहेंगे, साथ चलेंगे और साथ ही राज्य करेंगे!

फ़रिश्ते अर्थात् अधिकारी

कभी अधीन नहीं बनना– चाहे संकल्पों के, चाहे माया के। और भी कोई रूपों के अधीन नहीं बनना। इस शरीर के भी अधिकारी बनकर चलना और माया से भी अधिकारी बन उसको अपने अधीन करना है। सम्बन्ध की अधीनता में भी नहीं आना है। चाहे लौकिक, चाहे ईश्वरीय सम्बन्ध की भी अधीनता में न आना। सदा अधिकारी बनना है। यह स्लोगन सदैव याद रखना। ऐसा बन कर के ही निकलना। जैसे कहावत है ना कि मानसरोवर में नहाने से परियाँ बन जाते थे। इस ग्रुप को भी भट्ठी रूपी ज्ञानमानसरोवर में नहाकर फ़रिश्ता बन कर निकलना है। जब

फ़रिश्ता बन गया तो **फ़रिश्ते अर्थात् प्रकाशमय काया। इस देह की स्मृति से भी परे। उनके पाँव अर्थात् बुद्धि इस पाँच तत्व के आकर्षण से ऊँची अर्थात् परे होती है।** ऐसे फ़रिश्तों को माया व कोई भी मायावी टच नहीं कर सकेंगे। तो ऐसे बन कर जाना जो न कोई मायावी मनुष्य, न माया टच कर सके।

फ़रिश्ते अर्थात् कर्म वा गुणों का दान करने वाले

कितने प्रकार के दान करती हो? डबल दानी हो वा ट्रिपल या ट्रिपल से भी ज़्यादा हो? मुख्य तीन दान बताये। ज्ञान का दान भी करते हो, योग द्वारा शक्तियों का दान भी कर रहे हो और तीसरा दान है कर्म द्वारा गुणों का दान। **मनसा द्वारा सर्वशक्तियों का दान। वाणी द्वारा ज्ञान का दान, कर्म द्वारा सर्व गुणों का दान।** जो मनसा के महादानी होंगे उनके संकल्प में इतनी शक्ति होती है जो संकल्प किया उसकी सिद्धि मिली। तो मनसा महादानी संकल्पों की सिद्धि को प्राप्त करने वाला बन जाता है। जहाँ चाहे वहाँ संकल्पों को टिका सकते हैं। संकल्प के वश नहीं होंगे लेकिन संकल्प उनके वश होता है। जो संकल्पों की रचना रचे, वह रच सकता है। जब संकल्प को विनाश करना चाहें तो विनाश कर सकते हैं। तो ऐसे महादानी में संकल्पों के रचने, संकल्पों को विनाश करने और संकल्पों की पालना करने की तीनों ही शक्ति होती हैं। तो यह है मनसा का महादान। ऐसे ही समझो मास्टर सर्वशक्तिवान का प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाई देता है। जो वाचा के महादानी हैं उनको क्या मिलता है? वह हैं मास्टर नालेज़फुल। उनके एक-एक शब्द की बहुत वैल्यु होती है। एक रत्न की वैल्यु अनेक रत्नों से अधिक होती है। तो जो ज्ञान-रत्नों का दान करते हैं उनका एक-एक रत्न इतना वैल्युएबुल हो जाता है जो उनके एक-एक वचन सुनने के लिए अनेक आत्मायें प्यासी होती हैं। अनेक प्यासी आत्माओं की प्यास बुझाने वाला एक वचन बन जाता है। मास्टर नालेज़फुल, वैल्युएबुल और तीसरा फिर सेन्सीबुल बन जाता है। उनके एक-एक शब्द में सेन्स भरा हुआ होता है। सेन्स अर्थात् सार के बिना कोई शब्द नहीं होता। कर्मणा द्वारा गुणों का दान करने के कारण कौन-सी मूर्त्त बन जायेंगे? फ़रिश्ता। **कर्म अर्थात् गुणों का दान करने से उनकी चलन और चेहरा दोनों ही फ़रिश्ते की तरह दिखाई देंगे। दोनों प्रकार की लाइट होंगी अर्थात् प्रकाशमय भी और हल्कापन भी।** जो भी कदम उठेगा वह हल्का। बोझ महसूस नहीं करेंगे। जैसे कोई शक्ति चला रही है। हर कर्म में मदद की महसूसता करेंगे। हर कर्म में सर्व द्वारा प्राप्त हुआ वरदान अनुभव करेंगे। दूसरे, हर कर्म द्वारा महादानी बनने वाला सर्व की आशीर्वाद के पात्र बनने के कारण सर्व वरदान की प्राप्ति अपने जीवन में अनुभव करेंगे। मेहनत से नहीं, लेकिन वरदान के रूप में। तो कर्म में दान करने वाला एक तो फ़रिश्ता रूप नज़र आयेगा, दूसरा सर्व वरदानमूर्त्त अपने को अनुभव करेगा।

फ़रिश्ते अर्थात् मन, वचन, कर्म से सरल

कोई भी कार्य करते सिर्फ यह सोचो– मैं निमित्त हूँ, कराने वाला कौन है? जैसे भक्तिमार्ग में शब्द उच्चारण करते थे 'करन-करावनहार'। लेकिन वह दूसरे अर्थ से कहते थे। लेकिन इस समय जो भी कर्म करते हो उसमें करनकरावनहार तो है ना? कराने वाला बाप है, करने वाला निमित्त है। अगर यह स्मृति में रख कर्म करते हैं तो सहज स्मृति नहीं हुई? निरन्तर योगी नहीं हुए? फिर कभी हंसी में नीचे आयेंगे भी तो ऐसे अनुभव करेंगे जैसे हूबहू स्टेज पर कोई ऐक्टर होते हैं तो समझते हैं कि लोक-कल्याण अर्थ हंसी का पार्ट बजाया। फिर अपनी स्टेज पर तो बिल्कुल ऐसे अनुभव होगा जैसे अभी-अभी यह पार्ट बजाया, अब दूसरा पार्ट बजाता हूँ। खेल महसूस होगा। साक्षी हो जैसे पार्ट बजा रहे हैं। तो सहज योगी हुए ना? याद को भी सहज करो। जब यह याद का कोर्स सहज हो जायेगा

तब कोई को कोर्स देने में याद का फोर्स भी भर सकेंगे। सिर्फ कोर्स देने से प्रजा बनती है लेकिन फोर्स के साथ कोर्स से समीप सम्बन्ध में आते हैं। बिल्कुल ऐसे अनुभव करेंगे जैसे न्यारे और प्यारे। तो सभी सहज पुरुषार्थ में भी अगर मुश्किलातों में ही रहेंगे तो सहज और स्वत: का अनुभव कब करेंगे? इसको कहते भी सहज योग हो ना? कठिन योग तो नहीं है। यह सहज योग वहाँ सहज राज्य करायेगा। वहाँ भी कोई मुश्किलात नहीं होगी। यहाँ के संस्कार ही वहाँ ले जायेंगे। अगर अन्त तक भी मुश्किल के संस्कार होंगे तो वहाँ सहज राज्य कैसे करेंगे? देवताओं के चित्र भी जो बनाते हैं तो उनकी सूरत में सरलता ज़रूर दिखाते हैं। यह विशेष गुण दिखाते हैं। फीचर्स में सरलता जिसको आप भोलापन कहते हो। **जितना जो सहज पुरुषार्थी होगा वह मनसा में भी सरल, वाचा में सरल, कर्म में भी सरल होगा। इनको ही फ़रिश्ता कहते हैं।** अच्छा।

फ़रिश्ते अर्थात् हर कर्त्तव्य करते बाप की याद में उड़ने वाले

अभी का तिलक जन्म-जन्मान्तर का तिलकधारी वा ताजधारी बनाता है। तो सदैव एकरस रहना है। फोला फादर करना है। जो स्वयं हर्षित है वह कैसे भी मन वाले को हर्षित करेगा। हर्षित रहना यह तो ज्ञान का गुण है। इसमें सिर्फ रूहानियत एड () करना है। हर्षितपन का संस्कार भी एक वरदान है जो समय पर बहुत सहयोग देता है। अपने कमज़ोर संकल्प गिराने का कारण बन जाते हैं। इसलिए एक संकल्प भी व्यर्थ न जाये। क्योंकि संकल्पों के मूल्य का भी अभी मालूम पड़ा है। **अगर संकल्प, वाचा, कर्मणा– तीनों अलौकिक होंगे तो फिर अपने को इस लोक के निवासी नहीं समझेंगे। समझेंगे कि इस पृथ्वी पर पाँव नहीं हैं अर्थात् बुद्धि का लगाव इस दुनिया में नहीं है। बुद्धि रूपी पाँव देह रूपी धरती से ऊँचा है। यह खुशी की निशानी है। जितना-जितना देह के भान की तरफ से बुद्धि ऊपर होगी उतना वह अपने को फ़रिश्ता महसूस करेगा।** हर कर्त्तव्य करते बाप की याद में उड़ते रहेंगे तो उस अभ्यास का अनुभव होगा। स्थिति ऐसी हो जैसे कि उड़ रहे हैं। अच्छा।

फ़रिश्ते अर्थात् सारे विश्व का चक्र लगाने वाले

जैसे शुरू में घर बैठे भी अनेक समीप आने वाली आत्माओं को साक्षात्कार हुए ना! वैसे अब भी साक्षात्कार होंगे। यहाँ बैठे भी बेहद में आप लोगों का सूक्ष्म स्वरूप सर्विस करेगा। अब यही सर्विस रही हुई है। साकार में सभी इग्जाम्पल तो देख लिया। सभी बातें नम्बरवार ड्रामा अनुसार होनी हैं। **जितना-जितना स्वयं आकारी फ़रिश्ते स्वरूप में होंगे उतना आपका फ़रिश्ता रूप सर्विस करेगा। आत्मा को सारे विश्व का चक्र लगाने में कितना समय लगता है? तो अभी आपके सूक्ष्म स्वरूप भी सर्विस करेंगे।** लेकिन जो इस न्यारी स्थिति में होंगे, स्वयं फ़रिश्ते रूप में स्थित होंगे। शुरू में सभी साक्षात्कार हुए हैं। फ़रिश्ते रूप में सम्पूर्ण स्टेज और पुरुषार्थी स्टेज दोनों अलग-अलग साक्षात्कार होता था। जैसे साकार ब्रह्मा और सम्पूर्ण ब्रह्मा का अलग-अलग साक्षात्कार होता था, वैसे अन्य बच्चों के साक्षात्कार भी होंगे। हंगामा जब होगा तो साकार शरीर द्वारा तो कुछ कर नहीं सकेंगे और प्रभाव भी इस सर्विस से पड़ेगा। जैसेशुरू में भी साक्षात्कार से ही प्रभाव हुआ ना? परोक्ष अपरोक्ष-अनुभव ने प्रभाव डाला वैसे अन्त में भी यही सर्विस होनी है। अपने सम्पूर्ण स्वरूप का साक्षात्कार अपने आप को होता है?

फ़रिश्ते अर्थात् कर्म करते हुए कर्मातीत

जैसे बाप के लिए कहा हुआ है कि वह जो है वैसा ही उनको जानने वाला सर्व प्राप्तियाँ कर सकता है। वैसे ही स्वयं को जानने के लिए भी जो हूँ, जैसा हूँ, ऐसा ही जान कर और मान कर सारा दिन चलते-फिरते हो? क्योंकि

जैसे बाप को सर्व स्वरूपों से वा सर्व सम्बन्धों से जानना आवश्यक है ऐसे ही बाप द्वारा स्वयं को भी ऐसा जानना आवश्यक है। जानना अर्थात् मानना। मैं जो हूँ, जैसा हूँ– ऐसे मान कर चलेंगे तो क्या स्थिति होगी ? देह में विदेही, व्यक्त में होते अव्यक्त, चलते-फिरते फ़रिश्ता वा कर्म करते हुए कर्मातीत। क्योंकि जब स्वयं को अच्छी तरह से जान और मान लेते हैं तो जो स्वयं को जानता है उस द्वारा कोई भी संयम अर्थात् नियम नीचे-ऊपर नहीं हो सकता। संयम को जानना अर्थात् संयम में चलना। स्वयं को मान कर के चलने वाले से स्वत: ही संयम साथ-साथ रहता है। उनको सोचना नहीं पड़ता कि यह संयम है वा नहीं, लेकिन स्वयं की स्थिति में स्थित होने वाला जो कर्म करता है, जो बोलता है, जो संकल्प करता है वही संयम बन जाता है। जैसे साकार में स्वयं की स्मृति में रहने से जो कर्म किया वही ब्राह्मण परिवार का संयम हो गया ना? यह संयम कैसे बने? ब्रह्मा द्वारा जो कुछ चला वही ब्राह्मण परिवार के लिए संयम बना। तो स्वयं की स्मृति में रहने से हर कर्म संयम बन ही जाता है और साथ-साथ समय की पहचान भी उनके समाने सदैव स्पष्ट रहती है।

फ़रिश्ते अर्थात् दूसरों की इच्छाओं को पूर्ण करने वाले

स्वयं जो इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति में स्थित होगा वही किसी की भी इच्छाओं की पूर्ति कर सकता है। **अगर स्वयं में ही कोई इच्छा रही होगी तो वह दूसरे की इच्छाओं को पूर्ण नहीं कर सकते। इच्छा मात्रम् अविद्या की स्टेज तब रह सकती है जब स्वयं युक्तियुक्त, सम्पन्न, नॉलेजफुल और सदा सक्सेसफुल अर्थात् सफलता मूर्त्त होंगे।** जो स्वयं सफलता मूर्त्त नहीं होगा तो वह अनेक आत्माओं के संकल्प को भी सफल नहीं कर सकता। इसलिए जो सम्पन्न नहीं तो उसकी इच्छायें ज़रूर होंगी क्योंकि सम्पन्न होने के बाद ही इच्छा मात्रम् अविद्या की स्टेज आती है। तब कोई अप्राप्त वस्तु नहीं रह जाती तो ऐसी स्टेज को ही कर्मातीत अथवा फ़रिश्तेपन की स्टेज कहा जाता है। ऐसी स्थिति वाला ही हर आत्मा को यथार्थ परख सकता है और दूसरों को प्राप्ति करा सकता है।

फ़रिश्ते अर्थात् शीश महल में रहने वाले

अभी तो बड़े-बड़े दाग़ भी छुपाने से छुप जाते हैं, क्योंकि अभी शीश महल नहीं बना है जो कि चारों ओर के दाग़ स्पष्ट दिखई दे जावें। जब किनारा कर लेते, तो दाग़ छिप जाता अर्थात् पाप दर्पण के आगे स्वयं को लाने से किनारा कर छिप जाते हैं। छिपता नहीं है, लेकिन किनारा कर और छिपा हुआ समझ स्वयं को खुश कर लेते हैं। बाप भी बच्चों का कल्याणकारी बन अनजान बन जाते हैं जैसे कि जानते ही नहीं। अगर बाप कह दे कि मैं जानता हूँ कि यह दाग़ इतने समय से व इस रूप से है तो सुनने वाले का क्या स्वरूप होगा? सुनाना चाहते भी मुख बन्द हो जावेगा, क्योंकि सुनाने की विधि रखी हुई है। बाप जब कि जानते भी हैं, तो भी सुनते क्यों हैं? क्योंकि स्वयं द्वारा किये गये कर्म व संकल्प स्वयं वर्णन करेंगे तो ही महसूसता की सीढ़ी पर पाँव रख सकेंगे। महसूस करना या अफ़सोस करना या माफ़ी लेना बात एक हो जाती है। इसलिए सुनाने की अर्थात् स्वयं को हल्का बनाने की या परिवर्तन करने की विधि बनाई गई है। इस विधि से पापों की वृद्धि कम हो जाती है। इसलिए अगर शीश महल बनने के बाद, स्वयं को स्पष्ट देख कर के स्पष्ट किया तो रिज़ल्ट क्या होगी, यह जानते हो? बापदादा भी ड्रामा प्रमाण उन आत्माओं को स्पष्ट चैलेन्ज (र्ण्त्तहु) देंगे, तो फिर क्या कर सकेंगे? इसलिए **जब महसूसता के**

आधार पर स्पष्ट हो अर्थात् बोझ से स्वयं को हल्का करो, तब ही डबल लाइट स्वरूप अर्थात् फ़रिश्ता व आत्मिक स्थिति स्वरूप बन सकेंगे।

फ़रिश्ते अर्थात् लाइट के कार्ब में रहने वाले

अन्तिम लक्ष्य पुरुषार्थ के लिए कौन-सा है? वह है– अव्यक्त फ़रिश्ता हो रहना। अव्यक्त रूप क्या है? फ़रिश्तापन। उसमें भी लाइट रूप सामने है– अपना लक्ष्य। वह सामने रखने से जैसे लाइट के कार्ब (मैं) में यह मेरा आकार है। जैसे वतन में भी अव्यक्त रूप देखते हो, तो अव्यक्त और व्यक्त में क्या अन्तर देखते हो? व्यक्त पाँच तत्वों के कार्ब में हैं और अव्यक्त लाइट के कार्ब में हैं। लाइट का रूप तो है, लेकिन आसपास चारों ओर लाइट ही लाइट है, जैसे कि लाइट के कार्ब में, यह आकार दिखाई देता है। जैसे सूर्य को देखते हो, तो चारों ओर फैली सूर्य की किरणों की लाइट के बीच में, सूर्य का रूप दिखाई देता है। सूर्य की लाइट तो है, लेकिन उसके चारों ओर भी सूर्य की लाइट परछाई के रूप में फैली हुई दिखाई देती है और लाइट में विशेष लाइट दिखाई देती है। इसी प्रकार से, 'मैं आत्मा ज्योति रूप हूँ'– यह तो लक्ष्य है ही। लेकिन **मैं आकार में भी कार्ब में हूँ। चारों ओर अपना स्वरूप लाइट ही लाइट के बीच में स्मृति में रहे और दिखाई भी दे तो ऐसा अनुभव हो।** जैसे कि आइने में देखते हो तो स्पष्ट रूप दिखाई देता है, वैसे ही नॉलेज रूपी दर्पण में, अपना यह रूप स्पष्ट दिखाई दे और अनुभव हो। चलेते-फिरते और बात करते, ऐसे महसूस हो कि **'मैं लाइट रूप हूँ, मैं .फरिश्ता चल रहा हूँ और मैं फ़रिश्ता बात कर रहा हूँ।' तो ही आप लोगों की स्मृति और स्थिति का प्रभाव औरों पर पड़ेगा।** कर्त्तव्य करते हुए भी कि मैं फ़रिश्ता निमित्त इस कार्य-अर्थ, पृथ्वी पर पाँव रख रहा हूँ, लेकिन मैं हूँ अव्यक्त देश का वासी, अब इस स्मृति को ज़्यादा बढ़ाओ। ''मैं इस कार्य-अर्थ अवतरित हुई हूँ अर्थात् जैसे कि मैं इस कार्य-अर्थ पृथ्वी पर वतन से आई हूँ, कारोबार पूरी हुई, फिर वापस अपने वतन में। जैसे कि बाप आते हैं, तो बाप को स्मृति है ना कि हम वतन से आये हैं, कर्त्तव्य के निमित्त और फिर हमको वापिस जाना है। ऐसे ही आप सबकी भी यह स्मृति बढ़नी चाहिए कि मैं अवतार हूँ अर्थात् मैं अवतरित हुई हूँ। मैं मरजीवा बन रही हूँ, अभी मैं ब्राह्मण हूँ और फिर मैं देवता बनूँगी– यह भी वास्तव में मोटा रूप है। यह स्टेज भी साकारी है। **अभी आप लोगों की स्टेज आकारी चाहिए, क्योंकि आकारी से फिर निराकारी सहज बनेंगे।** जैसे बाप भी साकार से आकारी बना, आकारी से फिर निराकारी और फिर साकारी बनेंगे।'' अब आप लोगों को भी अव्यक्त वतनवासी स्टेज तक पहुँचना है, तभी तो आप साथ चल सकेंगे। अभी यह साकार से अव्यक्त रूप का पार्ट क्यों हुआ? सबको अव्यक्त स्थिति में स्थित कराने। क्योंकि अब तक उस स्टेज तक नहीं पहुँचे हैं। अभी अन्तिम पुरुषार्थ यह रह गया है। इसी से ही साक्षात्कार होंगे। साकार स्वरूप के नशे की प्वाइन्ट्स तो बहुत हैं कि मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ, मैं ब्राह्मण हूँ और मैं शक्ति हूँ। इस स्मृति से तो आपको नशे और खुशी का अनुभव होगा। **लेकिन जब तक इस अव्यक्त स्वरूप में, लाइट के कार्ब में स्वयं को अनुभव न किया है, तब तक औरों को आपका साक्षात्कार नहीं हो सकेगा। क्योंकि जो दैवी स्वरूप का साक्षात्कार भक्तों को होगा वह लाइट रूप की कार्ब में चलते-फिरते रहने से ही होगा। साक्षात्कार भी लाइट के बिना नहीं होता है।** स्वयं जब लाइट रूप में स्थित होंगे, आपके लाइट रूप के प्रभाव से ही उनको साक्षात्कार होगा। जैसे शास्त्रों में दिखाते हैं कि कंस ने कुमारी को मारा तो वह उड़ गई, साक्षात् रूपधारी हो गई और फिर आकाशवाणी की। वैसे ही आप लोगों का साक्षात्कार होगा, तो ऐसा अनुभव होगा कि मानो यह देवी द्वारा आकाशवाणी हो रही है। वह सुनने को इच्छुक होंगे कि यह देवी या शक्ति मेरे प्रति

क्या आकाशवाणी करती है। आप में अब यह नवीनता दिखाई दे। साधारण बोल नज़र न आयें, ऊपर से आकाशवाणी हो रही है, बस ऐसा अनुभव हो। इसलिए कहा कि **अब ज्वालामुखी बनने का समय है।** अब आपका गोपीपन का पार्ट समाप्त हुआ। महारथी जो आगे बढ़ते जा रहे हैं, उनका इस रीति सर्विस करने का पार्ट भी ऑटोमेटिकली बदली होता जाता है। पहले आप लोग भाषण आदि करती थीं और कोर्स कराती थीं। अभी चेयरमैन के रूप में थोड़ा बोलती हो, कोर्स आदि आपके जो साथी हैं वह कराते हैं। अभी इस समय कोई को आकर्षण करना, हिम्मत और हुल्लास में लाना, यह सर्विस रह गई है, तो फ़र्क आ जाता है ना? इससे भी आगे बढ़ कर यह अनुभव होगा जैसे कि आकाशवाणी हो रही है। कहेंगे यह कोई अवतार हैं और यह कोई साधारण शरीरधारी नहीं हैं। अवतार प्रगट हुए हैं, जैसे कि साक्षात्कार में अनुभव करते-करते देवी प्रगट हुई है। महावाक्य बोले और प्राय: लोप। अभी की स्टेज व पुरुषार्थ का लक्ष्य यह होना है।

फ़रिश्ते अर्थात् अव्यक्त स्थिति की लाइट के अन्दर हर एक्ट करने वाले

फ़रिश्ते स्वरूप की स्थिति में सदा रहते हो? फ़रिश्ते स्वरूप की लाइट में अन्य आत्माओं को भी लाइट ही दिखाई देगी। हद के एक्टर्स जब हद के अन्दर अपने एक्ट करते दिखाई देते हैं तो लाइट के कारण अति सुन्दर स्वरूप दिखाई देते हैं। वही एक्टर, साधारण जीवन में, साधारण लाइट के अन्दर पार्ट बजाते हुए कैसे दिखाई देते हैं? रात-दिन का अन्तर दिखाई देता है ना? लाइट का फोकस (दिम्ले) उनके फीचर्स (ूिलै) को परिवर्तित कर देता है। ऐसे ही **बेहद ड्रामा के आप हीरों-हिरोइन एक्टर्स, अव्यक्त स्थिति की लाइट के अन्दर हर एक्ट करने से क्या दिखाई देंगे? अलौकिक फ़रिश्ते। साकारी की बजाय सूक्ष्म वतनवासी नज़र आयेंगे। साकारी होते हुए भी आकारी अनुभव होंगे। हर एक्ट हरेक को स्वत: ही आकर्षित करने वाला होगा।** जैसे आज हद का सिनेमा व ड्रामा कलियुगी मनुष्यों को आकर्षण का मुख्य केन्द्र है। छोड़ना चाहते हुए और न देखना चाहते हुए भी हद के एक्टर्स की एक्ट अपनी ओर खींच लेती है, लेकिन उसका आधार लाइट है। ऐसे ही इस अन्तिम समय में माया के आकर्षण की अति के बाद अन्त होने पर, बेहद के हीरो एक्टर्स जो सदा जीरो स्वरूप में स्थित होते हुए जीरो बाप के साथ हर पार्ट बजाने वाले हैं और दिव्य ज्योति स्वरूप वाले जिनकी स्थिति भी लाइट की है और स्टेज पर हर पार्ट भी लाइट में हैं अर्थात् जो डबल लाइट वाले फ़रिश्ते हैं वे हर आत्मा को स्वत: ही अपनी तरफ़ आकर्षित करेंगे। आजकल की दुनिया में ड्रामा के अतिरिक्त और कौन-सी वस्तु है जो ऐसे फ़रिश्तों के नयनों जैसी आकर्षण करने वाली हैं? टी.वी.। जैसे टी.वी. द्वारा इस संसार की कैसी-कैसी सीन-सीनरियाँ देखते हुए कई आकर्षित होते अर्थात् गिरती कला में जाते हैं ऐसे ही **फ़रिश्तों के नयन दिव्य दूर-दर्शन का काम करेंगे। हर एक के नयनों द्वारा सिर्फ इस संसार के ही नहीं लेकिन तीनों लोकों के दर्शन करेंगे। ऐसे फ़रिश्तों के मस्तक में चमकती हुई मणि, आत्माओं को सर्च-लाइट** (ैम्प तुप्) **व लाइट हाउस के समान स्वयं का स्वरूप, स्वमार्ग और श्रेष्ठ मंज़िल का स्पष्ट साक्षात्कार करायेंगी।** ऐसे फ़रिश्तों के युक्तियुक्त बोल अर्थात् अमूल्य बोल, हर भिखारी आत्मा की रत्नों से झोली भरपूर करेंगे। जो गायन है देवतायें भी भक्तों पर प्रसन्न हो फूलों की वर्षा करते हैं– ऐसे आप श्रेष्ठ आत्माओं द्वारा विश्व की आत्माओं के प्रति सर्व शक्तियों, सर्व गुणों तथा सर्व वरदानों की पुष्प-वर्षा सर्व के प्रति होगी।

फ़रिश्ते अर्थात् निरन्तर नैचुरल डांस करने वाले

''वाह रे मैं!'' का नशा याद है? वह दिन, वह झलक और फलक स्मृति आती है? वह नशे के दिन अलौकिक थे। ऐसे नशे के दिन स्मृति में आते ही नशा चढ़ जाता है– इतना नशा, इतनी ख़ुशी जो स्थूल पाँव भी चलते-फिरते नैचुरल डांस करते हैं– प्रोग्राम से डांस नहीं। मन में भी नाच और तन भी नैचुरल नाचता रहे। यह नैचुरल डांस तो निरन्तर हो सकता है? आँखों का देखना, हाथों का हिलना और पाँव का चलना सब ख़ुशी में नैचुरल डांस करते हैं। उनको फ़रिश्तों का डांस कहते हैं– ऐसे नैचुरल डांस चलता रहता है? जैसे **कहते हैं कि फ़रिश्तों के पाँव धरती पर नहीं टिकते। ऐसे फ़रिश्ते बनने वाली आत्मायें भी इस देह अर्थात् धरती– जैसे वह धरती मिट्टी है वैसे यह देह भी मिट्टी है ना? तो फ़रिश्तों के पाँव धरती पर नहीं रहते अर्थात् फ़रिश्ते बनने वाली आत्माओं के पाँव अर्थात् बुद्धि इस देह रूपी धरती पर नहीं रह सकती।** यही निशानी है फ़रिश्तेपन की। जितना फ़रिश्तेपन की स्थिति के समीप जाते रहते, उतना देह रूपी धरती से पाँव स्वतः ही ऊपर होंगे। अगर ऊपर नहीं हैं, धरती पर रहते हैं तो समझो बोझ है। बोझ वाली वस्तु ऊपर नहीं रह सकती। हल्कापन न है, बोझ है तो इस देह रूपी धरती पर बार-बार पाँव आ जायेंगे, फ़रिश्ता अर्थात् हल्का नहीं बनेंगे। फ़रिश्तों के पाँव धरती से ऊँचे स्वतः ही रहते हैं, करते नहीं हैं। जो हल्का होता है उनके लिए कहते हैं कि यह तो जैसे हवा में उड़ता रहता है। चलता नहीं है, उड़ता है। ऐसे ही फ़रिश्ते भी ऊँची स्थिति में उड़ते हैं। ऐसे नैचुरल फ़रिश्तों का डांस देखने और करने में भी मजा आता है।

फ़रिश्ते अर्थात् जिसका आत्माओं से भी कोई रिश्ता नहीं

सारे दिन में कितना समय फ़रिश्ते हो रहते और कितना समय फ़रिश्तों के बजाय मृत्युलोक के मानव होते हो? **दैवी परिवार के रिश्तों में भी फ़रिश्ते नहीं आते।** वह तो सदैव न्यारे रहते हैं। रिश्ते सब किससे हैं? अगर कोई को सखी बनाया तो बाप से वह सखीपन का रिश्ता कम हो जायेगा। कोई भी सम्बन्ध चाहे बहन का या भाई का या अन्य कोई भी रिश्ता जोड़ा तो एक से ज़रूर वह रिश्ता हल्का होगा। क्योंकि बँट जाता है ना? दिल का टुकड़ा-टुकड़ा हो गया तो टूटा हुआ दिल हो गया। टूटे हुए दिल को बाप भी स्वीकार नहीं करते। यह भी गुह्य रिश्तों की फिलॉसॉफी है। **सिवाय एक के और कोई से रिश्ता नहीं– न सखा, न सखी, न बहन, न भाई। तो उस सम्बन्ध में भी आत्मा ही याद आयेगी। फ़रिश्ता अर्थात् जिसका आत्माओं से कोई रिश्ता नहीं।** प्रीत जुटाना सहज है, लेकिन निभाना मुश्किल है। निभाने में ही नम्बर होते हैं। जुटाने में नहीं होते। निभाना किसी-किसी को आता है, सब को नहीं आता। निभाने की लाइन बदली हो जाती है। लक्ष्य एक होता है लक्षण दूसरे हो जाते हैं। इसलिए निभाते कोई-कोई हैं, जुटाते सब हैं। भक्त भी जुटाते हैं लेकिन निभाते नहीं हैं। बच्चे निभाते हैं, लेकिन उसमें भी नम्बरवार। कोई एक सम्बन्ध में भी अगर निभाने में कमी हो गई या सम्बन्ध में ज़रा-सी कमी हुई, मानों ७५ऽ सम्बन्ध बाप से है और २५ऽ सम्बन्ध कोई एक आत्मा से है, तो भी निभाने वाले की लिस्ट में नहीं रखेंगे। बाप का साथ ७५ऽ रखते हैं और कभी-कभी २५ऽ कोई का साथ लिया तो भी निभाने वाले की लिस्ट में नहीं आयेंगे। निभाना तो निभाना। यही भी गुह्य गति है। संकल्प में भी कोई आत्मा न आये– इसको कहते हैं सम्पूर्ण निभाना। कैसी भी परिस्थिति हो, चाहे मन की, तन की या सम्पर्क की– कोई भी आत्मा संकल्प में न आये। संकल्प में भी कोई आत्मा की स्मृति आई तो उसी सेकेण्ड का भी हिसाब बनता है। तभी तो आठ पास होते हैं।

विशेष आठ का ही गायन है। ज़रूर इतनी गुह्य गति होगी। बड़ा कड़ा पेपर है। तो फ़रिश्ता उनको कहा जाता है जिसके संकल्प में भी कोई न रहे। कोई परिस्थिति में, मजबूरी में भी नहीं। सेकेण्ड के लिए संकल्प में भी न हो। मजबूरी में भी मजबूत रहे– तब है फ़रिश्ता।

जो बाप के रिश्ते से प्राप्ति होती है वह उसी सेकेण्ड में स्मृति में नहीं आती है, भूल जाते हैं। इसलिए कोई का आधार ले लेते हैं। प्राप्ति कोई कम है क्या? मुश्किल के समय बाप का सहारा लेना चाहिए, न कि किसी आत्मा का सहारा लेना चाहिए। लेकिन उस समय वह प्राप्ति भूल जाती है। कमज़ोर होते हैं। जैसे डूबते हुए को तिनका मिल जाता है तो उसका सहारा ले लेते हैं। उस समय परेशानी के कारण जो तिनका सामने आता है उनका सहारा ले लेते हैं, लेकिन उससे बेसहारे हो जायेंगे– यह स्मृति में नहीं रहता। अपने को फ़रिश्तों की सभा में बैठने वाला फ़रिश्ता समझते हो? फ़रिश्ता अर्थात् जिसके सर्व सम्बन्ध वा सर्व रिश्ते एक के साथ हों। एक से सर्व रिश्ते और सदा एकरस स्थिति में स्थित हों। एक-एक सेकेण्ड, एक-एक बोल, एक की ही लगन में और एक की ही सेवा प्रति हों। चलते-फिरते, देखते-बोलते और कर्म करते हुए व्यक्त भाव से न्यारे अव्यक्त अर्थात् इस व्यक्त देह रूपी धरनी की स्मृति से बुद्धि रूपी पाँव सदा ऊपर रहे अर्थात् उपराम रहे। जैसे बाप ईश्वरीय सेवा-अर्थ वा बच्चों को साथ ले जाने की सेवा-अर्थ वा सच्चे भक्तों को बहुत समय के भक्ति का फल देने अर्थ, न्यारे और निराकार होते हुए भी अल्पकाल के लिए आधार लेते हैं वा अवतरित होते हैं ऐसे ही फ़रिश्ता अर्थात् सिर्फ ईश्वरीय सेवा-अर्थ यह साकार ब्राह्मण जीवन मिला है। धर्मस्थापक धर्म स्थापना का पार्ट बजाने के लिए आये हैं– इसलिए नाम ही है शक्ति अवतार–इस समय अवतार हूँ, धर्म स्थापक हूँ। सिवाये धर्म स्थापन करने के कार्य के और कोई भी कार्य आप ब्राह्मण अर्थात् अवतरित हुई आत्माओं का है ही नहीं। सदा फ़रिश्ता डबल लाइट रूप है। एक लाइट अर्थात् सदा ज्योति स्वरूप, दूसरा लाइट अर्थात् कोई भी पिछले हिसाब-किताब के बोझ से न्यारा अर्थात् हल्का। ऐसे डबल लाइट स्वरूप अपने को अनुभव करते हो?

फ़रिश्ते अर्थात् अन्त:वाहक शरीर द्वारा चक्कर लगाने वाले

जैसे बाप चारों ओर चक्कर लगाते हैं वैसे आप भी भक्तों के चारों ओर चक्कर लगाती हो? कभी सैर करने जाती हो? आवाज़ सुनने में आती है, तो कशिश नहीं होती है? बाप के साथ-साथ शक्तियों को भी पार्ट बजाना है। जैसे शक्तियों का गायन है कि अन्त:वाहक शरीर द्वारा चक्कर लगाती थीं, वैसे बाप भी अव्यक्त रूप में चक्कर लगाते हैं। **अन्त:वाहक अर्थात् अव्यक्त फ़रिश्ते रूप में सैर करना। यह भी प्रैक्टिस चाहिए और यह अनुभव होंगे। जैसे साइंस के यन्त्र दूर्बीन द्वारा दूर की सीन को नज़दीक में देखते हैं ऐसे ही याद के नेत्र द्वारा, अपने फ़रिश्तेपन की स्टेज द्वारा दूर का दृश्य भी ऐसे ही अनुभव करेंगे जैसे साकार नेत्रों द्वारा कोई दृश्य देख आये।** बिल्कुल स्पष्ट दिखाई देंगे अर्थात् अनुभव होगा। साइंस का मूल आधार है लाइट। लाइट के आधार से साइंस का जलवा है। **लाइट की ही शक्ति है। ऐसे ही सालेन्स की शक्ति का आधार है डिवाइन इनसाइट** । इन द्वारा साइलेन्स की शक्ति के बहुत वन्डरफुल अनुभव कर सकते हो। यह भी अनुभव होंगे। जैसे स्थूल साधन द्वारा सैर कर सकते हैं वैसे ही जब चाहो, जहाँ चाहो वहाँ का अनुभव कर सकते हो। न सिर्फ इतना जो सिर्फ आपको अनुभव हो लेकिन जहाँ आप पहुँचो उन्हों को भी अनुभव होगा कि आज जैसे प्रैक्टिकल मिलन हुआ। यह है सफलतामूर्त्त की सिद्धि। वह तो रिवाजी आत्माओं को भी सिद्धि प्राप्त होती है। एक ही समय अनेक स्थानों पर अपना रूप प्रकट कर सकते और अनुभव करा सकते हैं। वह तो अल्प काल की सिद्धि है, लेकिन यह है ज्ञानयुक्त

सिद्धि। ऐसे अनुभव भी बहुत होंगे। आगे चल कर कई नई बातें भी तो होंगी ना? जैसे शुरू में घर बैठे ब्रह्मा रूप का साक्षात्कार होता था जैसे कि प्रैक्टिकल कोई बोल रहा है, इशारा कर रहा है, ऐसे ही अन्त में भी निमित्त बनी हुई शक्ति सेना का अनुभव होगा।

फ़रिश्ते अर्थात् सिद्धि-पुरुष

महारथी बच्चों को वर्तमान समय कौन-सा पोतामेल रखना है? अभी महारथियों की सीज़न है सिद्धि स्वरूप बनने की। उनके हर बोल और संकल्प सिद्ध हों। वह तब होंगे जब उनका हर बोल और हर संकल्प ड्रामा अनुसार सत् और समर्थ हो। तो महारथी अब यह पोतामेल रखें कि सारे दिन में जो उनके संकल्प चलते हैं या मुख से जो बोल निकलते हैं वह कितने सिद्ध होते हैं। संकल्प है बीज। जो समर्थ बीज होगा उसका फल अच्छा निकलता है। उसको कहेंगे संकल्प सिद्ध होना। तो सारे दिन में कितने संकल्प और बोल सिद्ध होते हैं? जो बोला ड्रामा अनुसार वही बोला और जो होना है वही बोला। इसमें हर बोल और संकल्प को समर्थ बनाने में अटेन्शन रखना पड़े। तो महाराथियों का पोतामेल अब यह होना चाहिए। जैसे भक्ति में भी कहा जाता है कि यह सिद्ध-पुरुष है। तो यहाँ भी जिसका संकल्प और बोल सिद्ध होता है तो उस सिद्धि के आधार पर वह प्रसिद्ध बनता है। अगर सिद्ध नहीं तो प्रसिद्ध नहीं। भक्ति में कई देवियाँ व देवतायें प्रसिद्ध होते हैं, कई प्रसिद्ध नहीं होते। वे देवता व देवी तो माने जाते हैं लेकिन प्रसिद्ध नहीं होते। तो **संकल्प और बोल सिद्ध होना यह आधार है प्रसिद्ध होने का। इससे ऑटोमेटिकली अव्यक्त फ़रिश्ता बन जायेंगे और समय बच जायेगा। वाणी में आना ऑटोमेटिकली समाप्त हो जायेगा क्योंकि साइलेन्स-होम अथवा शान्तिधाम में जाना है ना? तो वह साइलेन्स के व आकारी फ़रिश्तेपन के संस्कार अपनी तरफ़ खींचेंगे।** सर्विस भी इतनी बढ़ती जायेगी कि जो वाणी द्वारा सेवा करने का चॉन्स (र्म्हिम) ही नहीं मिलेगा। ज़रूर नैनों द्वारा और अपने मुस्कराते हुए मुख द्वारा, मस्तक में चमकती हुई मणि द्वारा सेवा कर सकेंगे। वह अभ्यास तब बढ़ेगा जब यह पोतामेल रखेंगे।

फ़रिश्ते अर्थात् ज़रा भी मेरापन में नहीं रहने वाला

सभी ने बाप से पूरा-पूरा अधिकार ले लिया है? पूरा अधिकार लेने के लिए पुराना सबकुछ देना पड़े। तो दोनों सौदे किये हैं ना? या तेरा सो मेरा लेकिन मेरे को हाथ नहीं लगाना– ऐसे तो नहीं है ना? जब एक शब्द बदल जाता है अर्थात् मेरा तेरे में बदल जाता तो डबल लाइट हो जाते हैं। **ज़रा भी मेरापन आया तो ऊपर से नीचे आ जाते हैं। तेरा तेरे अर्पण तो सदा डबल लाइट और सदा ऊपर उड़ते रहेंगे अर्थात् ऊँची स्थिति में रहेंगे। .फरिश्ते अर्थात् अपने फ्युचर द्वारा अन्य आत्माओं के फ्युचर बनाने वाले** सदा अपना फ्युचर सामने रहता है? जितना निमित्त बनी हुई आत्मायें अपने फ्युचर को सदा सामने रखेंगी उतना अन्य आत्माओं को भी अपना फ्युचर बनाने की प्रेरणा दे सकेंगी। अपना फ्युचर स्पष्ट नहीं तो दूसरों को भी स्पष्ट बनाने का रास्ता नहीं बता सकेंगी। **अपना फ्युचर स्पष्ट है? महाराजा या महारानी– जो भी बने, लेकिन उससे पहले अपना भविष्य फ़रिश्तेपन का, कर्मातीत अवस्था का– वह सामने स्पष्ट आता है? ऐसा अनुभव होता है कि मैं हर कल्प में फ़रिश्ते स्वरूप में ये पार्ट बजा चुकी हूँ और अभी बजाना है? वो झलक सामने आती है?** जैसे दर्पण में अपने स्वरूप की झलक देखते हो ऐसे नॉलेज के दर्पण में अपने पुरुषार्थ से फ़रिश्तेपन की झलक स्पष्ट दिखाई देती है? जब तक फ़रिश्तेपन की झलक स्पष्ट दिखाई नहीं देगी तब तक भविष्य भी स्पष्ट नहीं होगा। यह संकल्प आता ही रहेगा कि

शायद मैं ये बनूँ या वो बनूँ? लेकिन फ़रिश्तेपन की झलक स्पष्ट दिखाई देगी तो वह भी स्पष्ट दिखाई देगी। तो वह दिखाई देता है या अभी घूँघट में है? जैसे चित्र का अनावरण कराते हो तो अपने फ़रिश्ते स्वरूप का अनावरण कब करेंगे? आपे ही करेंगे या चीफ़ गेस्ट को बुलायेंगे? **यह पुरुषार्थ की कमज़ोरी का पर्दा हटाओ तो स्पष्ट फ़रिश्ता रूप हो जायेगा।**

फ़रिश्ते अर्थात् अथक और सबकुछ बाप के हवाले करने वाले

सबसे सहज बात कौन-सी है, जिसको समझने से सदा के लिए सहज मार्ग अनुभव होगा? वह सहज बात है सदा अपनी ज़िम्मेदारी बाप को दे दो। ज़िम्मेवारी देना सहज है ना? स्वयं को हल्का करो तो कभी भी मार्ग मुश्किल नहीं लगेगा। मुश्किल तब लगता है जब थकना होता या उलझते हैं। जब **सब ज़िम्मेवारी बाप को दे दी तो फ़रिश्ते हो गये।** फ़रिश्ते कब थकते हैं क्या? लेकिन यह सहज बात नहीं कर पाते तब मुश्किल हो जाता। ग़लती से छोटी-छोटी ज़िम्मेवारियों का बोझ अपने ऊपर ले लेते इसलिए मुश्किल हो जाता। भक्ति में कहते थे– सब कर दो राम हवाले। अब जब करने का समय आया तब अपने हवाले क्यों करते? मेरा स्वभाव, मेरा संस्कार– यह मेरा कहाँ से आया? अगर मेरा खत्म तो नष्टोमोहा हो गये। जब मोह नष्ट हो गया तो सदा स्मृति स्वरूप हो जायेंगे। सब कुछ बाप के हवाले करने से सदा खुश और हल्के रहेंगे। देने में फिराक दिल बनो। अगर पुरानी कीचड़पट्टी रख लेंगे तो बीमारी हो जायेगी। .

फरिश्ते अर्थात् प्रकट होने वाले और समा जाने वाले

अभी तो चलते-फिरते ऐसे अनुभव होना चाहिए जैसे साकार को देखा– चलते-फिरते या तो फ़रिश्ते रूप का या भविष्य रूप का अनुभव होता था, तभी तो औरों को भी होता था। मैं टीचर हूँ, मैं सेवाधारी हूँ– यह तो जैसा समय वैसा स्वरूप हो जाता है। अब **स्वयं को फ़रिश्ते रूप में अनुभव करो तो साक्षात्कार होगा।** साक्षात्कार का रूप कौन-सा है? फ़रिश्ता रूप बनना, चलते-फिरते फ़रिश्ता स्वरूप। अगर साक्षात् फ़रिश्ते नहीं बनेंगे तो साक्षात्कार कैसे करा सकेंगे? तो अब विशेष पुरुषार्थ कौन-सा है? यही कि **फ़रिश्ता इस साकार सृष्टि पर आया हूँ सेवा अर्थ। फ़रिश्ते प्रकट होते हैं, फिर समा जाते हैं। फ़रिश्ते सदा इस साकारी सृष्टि पर ठहरते नहीं, कर्म किया और गायब।** तो जब ऐसे फ़रिश्ते होंगे तो इस देह और देह के सम्बन्ध व पुरानी दुनिया में पाँव नहीं टिकेगा। जब कहते हो कि हम बाप के स्नेही हैं तो बाप सूक्ष्मवतनवासी और आप सारा दिन स्थूलवनतवासी, तो स्नेही कैसे? तो सूक्ष्मवतनवासी फ़रिश्ते बनो। सर्व आकर्षणों या लगावों के रिश्ते और रास्ते बन्द करो तो कहेंगे कि बाप-स्नेही हो। यहाँ होते हुए भी जैसे कि नहीं है– यह है लास्ट स्टेज । विशेष सेवार्थ निमित्त हो, तो पुरुषार्थ में भी विशेष होना चाहिए। जब दूसरों को चलते-फिरते अनुभव होगा कि आप लोग फ़रिश्ते हैं, तो दूसरे भी प्रेरणा ले सकेंगे। अगर साकार सृष्टि की स्मृति से परे हो जाओ तो जो छोटी-छोटी बातों में टाइम वेस्ट करते हो, वह नहीं होगा। तो अब हाई जम्प लगावो। साकार सृष्टि से एकदम फ़रिश्तों की दुनिया में व फ़रिश्ता स्वरूप– इसको कहते हैं हाई जम्प। तो छोटी-छोटी बातें शोभेंगी नहीं। तो यह बाप की विशेष सौगात है। सौगात लेना अर्थात् फ़रिश्ता स्वरूप बनना। तो बाप भी यह फ़रिश्ता स्वरूप का चित्र सौगात में देते हैं। इस सौगात से पुरानी बातें सब समाप्त हो जायेंगी। क्या और क्यों की रट नहीं लगानी है। निर्णय शक्ति, परखने की शक्ति, परिवर्तन शक्ति– जब ये तीनों शक्तियाँ होंगी

तो ही एक-दूसरे को खुशखबरी सुनायेंगे। अगर खुद में परिवर्तन नहीं तो दूसरों में भी परिवर्तन नहीं ला सकेंगे। अच्छा।

फ़रिश्ते अर्थात् सदा शुभ चिन्तक और सदा निश्चिन्त

बापदादा सदा हर्षित, सदा हद के आकर्षणों से परे अव्यक्त फ़रिश्तों को देख रहे हैं। यह फ़रिश्तों की सभा है। **हर फ़रिश्ते के चारों ओर लाइट का क्राउन** कितना स्पष्ट दिखाई देता है अर्थात् हर फ़रिश्ता लाइट-हाउस और माइट-हाउस कहाँ तक बना है– यह आज बापदादा देख रहे हैं। जैसे भविष्य स्वर्ग की दुनिया में सब देवता कहलायेंगे वैसे वर्तमान समय संगम पर फ़रिश्ते समान सब बनते हैं लेकिन नम्बरवार। जैसे वहाँ हर एक अपनी स्थिति प्रमाण सतोप्रधान होते हैं वैसे यहाँ भी हर पुरुषार्थी फ़रिश्तेपन की स्टेज को प्राप्त ज़रूर करते हैं। तो आज बापदादा हर एक की रिजल्ट को देख रहे थे। क्योंकि अब अन्तिम रियलाइजेशन कोर्स चल रहा है। रियलाइजेशन कोर्स में हर एक अपने आपको कहाँ तक रियलाइज कर रहे हैं? तो रिजल्ट में दो विशेष बातें देखीं। वह कौन-सी? हर एक किस पोजिशन तक पहुँचे हैं? ऑपोजिशन ज़्यादा है अथवा पोजिशन की स्टेज ज़्यादा है? दूसरा– पुरानी देह और पुरानी दुनिया से स्मृति को कहाँ तक ट्रॉन्सफर किया है? साथ-साथ ट्रान्सफर के आधार पर ट्रान्सपेरेन्ट कहाँ तक बने हैं? चारों ही सब्जेक्टस में कहाँ तक प्रैक्टिकल स्वरूप बने हैं? बापदादा के तीनों स्वरूप– साकार, आकार और निराकार द्वारा ली हुई पालना और पढ़ाई का रिटर्न कहाँ तक किया है? आदि से अब तक जो बापदादा से वायदे किये हैं उन सब वायदों को निभाने का स्वरूप कहाँ तक है?

फ़रिश्तेपन की लास्ट स्टेज की निशानी है– **सदा शुभ चिन्तक और सदा निश्चिन्त।** ऐसे बने हो? रियलाइजेशन कोर्स में स्वयं को रियलाइज करो और अब अन्तिम थोड़े-से पुरुषार्थ के समय में स्वयं में सर्व शक्तियों को प्रत्यक्ष करो।

फ़रिश्ते अर्थात् सर्व को ऊँची मंज़िल पर ले जाने वाले

टीचर्स अर्थात् फ़रिश्ता। टीचर का काम है– पण्डा बन करके यात्रियों को ऊँची मंज़िल पर ले जाना। ऊँची मंज़िल पर कौन ले जा सकेगा? जो स्वयं **फ़रिश्ता अर्थात् डबल लाइट** होगा। हल्का ही ऊँचा जा सकता है। भारी नीचे जायेगा। टीचर का काम है ऊँची मंज़िल पर ले जाना, तो खुद क्या करेंगे? फ़रिश्ता होंगे ना? अगर फ़रिश्ते नहीं तो खुद भी नीचे रहेंगे और दूसरों को भी नीचे लायेंगे। अपने को फ़रिश्ता अनुभव करती हो? बिल्कुल हल्का। देह का भी बोझ नहीं। मिट्टी बोझ वाली होती है ना? देहभान भी मिट्टी है। जब इसका भान है तो भारी रहेंगे। इससे परे हल्का अर्थात् फ़रिश्ता होंगे। तो देह के भान से भी हल्कापन। देह के भान से परे तो और सभी बातों से स्वत: ही परे हो जायेंगे। **फ़रिश्ता अर्थात् बाप के साथ सभी रिश्ते हों। अपनी देह के साथ भी रिश्ता नहीं।** बाप का दिया हुआ तन भी बाप को दे दिया था। अपनी वस्तु दूसरे को दे दी तो अपना रिश्ता खत्म हुआ। सब हिसाब-किताब बाप से, और किसी से नहीं। तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से बोलूँ... तो लेन-देन सब खाता बाप से हुआ ना? जब एक बाप से सब खाता हुआ तो और सभी खाते खत्म हो गये ना? टीचर अर्थात् जिसके सब खाते बाप से अर्थात् सब रिश्ते बाप से। कोई पिछला खाता नहीं, सब खत्म हो गया। इसको ही कहा जाता है **सम्पूर्ण बेगर** । **बेगर का कोई बैंक बैलेन्स नहीं होता।** खाता नहीं, कोई रिश्ता नहीं। **न किसी व्यक्ति से, न किसी वैभव से। खाते समाप्त।** पिछले कर्मों के खाते में कोई भी बैंक बैलेन्स नहीं होना चाहिए। ऐसी चेकिंग करनी है। ऐसे कोई होते हैं

कि मरने के बाद कोई सड़ा हुआ खाता रह जाता है तो पीछे वालों को तंग करता है। तो चेक करते हो कि सब खाते समाप्त हैं? स्वभाव, संस्कार, सम्पर्क, सब बातें, सब रिश्ते खत्म। फिर खाली हो जायेंगे ना? जब इतना हल्का बने तभी पण्डा बन औरों को ऊँचा उठा सकेंगे। तो समझा टीचर को क्या करना होता है? **फ़रिश्ते अर्थात् सदा ऊपर से साक्षी होकर देखने वाले और सकाश देने वाले** सदा अपने को चलते-फिरते लाइट के कार्ब के अन्दर आकारी फ़रिश्ते के रूप में अनुभव करते हो? जैसे ब्रह्मा बाप अव्यक्त फ़रिश्ते के रूप में चारों ओर की सेवा के निमित्त बने हैं ऐसे बाप समान स्वयं को भी लाइट स्वरूप आत्मा और लाइट के आकारी स्वरूप फ़रिश्ते स्वरूप में अनुभव करते हो? बापदादा दोनों के समान बनना है ना? दोनों से स्नेह है ना? स्नेह का सबूत है– समान बनना। जिससे स्नेह होता है तो जैसे वह बोलेगा वैसे ही बोलेगा। स्नेह अर्थात् संस्कार मिलाना और संस्कार मिलन के आधार पर स्नेह भी होता। संस्कार नहीं मिलता तो कितना भी स्नेही बनाने की कोशिश करो, नहीं बनेगा। तो दोनों बाप के स्नेही हो? **बाप समान बनना अर्थात् लाइट रूप आत्मा स्वरूप में स्थित होना और दादा समान बनना अर्थात् फ़रिश्ता।** दोनों बाप को स्नेह का रिटर्न देना पड़े। तो स्नेह का रिटर्न दे रहे हो? फ़रिश्ता बन कर चलते हो कि पाँच तत्वों से अर्थात् मिट्टी से बनी हुई देह अर्थात् धरनी अपने तरफ आकर्षित करती? जब आकारी हो जायेंगे तो यह देह (धरनी) आकर्षित नहीं करेगी। बाप समान बनना अर्थात् डबल लाइट बनना। दोनों ही लाइट हैं? वह आकारी रूप में, वह निराकारी रूप में। तो दोनों समान हो ना? समान बनेंगे तो सदा समर्थ और विजयी रहेंगे। समान नहीं तो कभी हार, कभी जीत– इसी हलचल में होंगे। अचल बनने का साधन है समान बनना। **चलते-फिरते सदैव अपने को निराकारी आत्मा या कर्म करते अव्यक्त फ़रिश्ता समझो। तो सदा ऊपर रहेंगे, उड़ते रहेंगे ख़ुशी में। फ़रिश्ते सदैव उड़ते हुए दिखाते हैं। फ़रिश्ते का चित्र भी पहाड़ी के ऊपर दिखायेंगे। फ़रिश्ता अर्थात् ऊँची स्टेज पर रहने वाला। कुछ भी इस देह की दुनिया में होता रहे, लेकिन फ़रिश्ता ऊपर से साक्षी हो सब पार्ट देखता रहे और सकाश देता रहे। सकाश भी देना है क्योंकि कल्याण के प्रति निमित्त है।** साक्षी हो देखते सकाश अर्थात् सहयोग देना है। सीट से उतर कर सकाश नहीं दी जाती। सकाश देना ही निभाना है। निभाना अर्थात् कल्याण की सकाश देना, लेकिन ऊँची स्टेज पर स्थित होकर देना– इसका अटेन्शन हो। निभाना अर्थात् मिक्स नहीं हो जाना, लेकिन निभाना अर्थात् वृत्ति, दृष्टि से सहयोग की सकाश देना। फिर सदा किसी भी प्रकार के वातावरण के सेक में नहीं आयेगा। अगर सेक आता तो समझना चाहिए साक्षीपन की स्टेज पर नहीं है। कार्य के साथी नहीं बनना है, बाप के साथी बनना है। जहाँ साक्षी बनना चाहिए वहाँ साथी बन जाते तो सेक लगता। ऐसे निभाना सीखेंगे तो दुनिया के आगे लाइट-हाउस बन के प्रख्यात होंगे।

फ़रिश्ते अर्थात् भक्तों को और वैज्ञानिकों को टचिंग कराने वाले

(दीदी से) वर्तमान समय महावीरों की वतन में विशेष महफिल लगती है। क्यों लगती है, वह जानती हो? आजकल बापदादा ने जैसे स्थापना में ब्रह्मा के सम्पूर्ण स्वरूप द्वारा साक्षात्कार कराने की सेवा ली, ऐसे आजकल अष्ट रत्न सो इष्ट रत्न उनको भी शक्ति के रूप में साथ-साथ साक्षात्कार कराने की सेवा कराते हैं। स्थूल शरीर द्वारा साकारी ईश्वरीय सेवा में बिजी रहते हो लेकिन आजकल अनन्य श्रेष्ठ आत्माओं की डबल सेवा चल रही है। जैसे ब्रह्मा द्वारा स्थापना की वृद्धि हुई वैसे अभी शिव-शक्ति के कम्बाइन्ड स्वरूप द्वारा साक्षात्कार और सन्देश

मिलने का कार्य आपके सूक्ष्म शरीरों द्वारा भी हो रहा है। तो बापदादा अनन्य बच्चों को इस सेवा में भी सहयोगी बनाते हैं। इसलिए सूक्ष्म सेवा के प्रैक्टिकल प्लैन के कारण वहाँ महफिल लगती है। इसलिए महावीर **बच्चों को कर्म करते भी किसी भी कर्मबन्धन से मुक्त सदा डबल लाइट रूप में रहना है। बाप ने सूक्ष्म वतन में इमर्ज किया, सेवा कराई– उसकी अनुभूति इस साकार सृष्टि से भी कर सकते हो।** ऐसे अनुभव आगे चल कर बहुत करेंगे। डबल सेवा का पार्ट चल रहा है। बापदादा अनन्य बच्चों के संगठन द्वारा भक्तों को और वैज्ञानिकों को, दोनों को टचिंग कराने की सेवा कराते रहते हैं। उनमें अनन्य भक्ति के संस्कार भर रहे हैं जो आधा कल्प भक्ति मार्ग को चलाते रहेंगे। और वैज्ञानिकों को परिवर्तन करने और रिफ़ाइन साधन बनाने में। जो साधन जैसे ही सम्पन्न होंगे तो उसका सुख सम्पूर्ण आत्मायें लेंगी। ये (वैज्ञानिक) नहीं ले सकेंगे। तो दोनों ही कार्य सूक्ष्म सेवा द्वारा हो रहे हैं। समझा?

सारे दिन में सूक्ष्म वतनवासी कितना समय होकर रहती हो कि स्थूल सेवा ज़्यादा है? आप लोग कितना भी बिज़ी रहो, बाप तो अपना कार्य करा ही लेते हैं। अपने सम्पूर्ण आकार का अनुभव किया है? जैसे साकार आकार हो गये, **आप सबका भी सम्पूर्ण आकारी स्वरूप है। जो नम्बरवार हरेक साकार-आकार बन जायेंगे।** आकार बन करके सेवा करना अच्छा है या साकार शरीर परिवर्तन कर सेवा करना अच्छा है? एडवान्स पार्टी तो साकार शरीर परिवर्तन कर सेवा कर रही है। लेकिन **कोई-कोई का पार्ट अन्त तक साकारी और आकारी रूप द्वारा भी चलता है।** आपका क्या पार्ट है? किसका एडवान्स पार्टी का पार्ट है, किसका अन्त:वाहक शरीर द्वारा सेवा का पार्ट है। दोनों पार्ट का अपना-अपना महत्त्व है। फर्स्ट, सेकेण्ड की बात नहीं। वैराइटी पार्ट का महत्त्व है। एडवान्स पार्टी का भी कार्य कोई कम नहीं है। सुनाया ना वह ज़ोर-शोर से अपने प्लैन बना रहे हैं। वहाँ भी नामीग्रामी हैं।

फ़रिश्ते अर्थात् बापदादा समान और सम्पन्न

आज हरेक बच्चे का डबल स्वरूप देख रहे हैं। कौन-सा डबल रूप? एक वर्तमान पुरुषार्थी स्वरूप, दूसरा वर्तमान जन्म का अन्तिम सम्पूर्ण फ़रिश्ता स्वरूप। इस समय 'हम सो, सो हम' के मन्त्र में पहले हम सो फ़रिश्ता हैं फिर भविष्य में हम सो देवता हैं। इस समय सभी का लक्ष्य पहले फ़रिश्ता स्वरूप, फिर देवता रूप है। आज वतन में, सभी बच्चों के नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार, जो अन्तिम फ़रिश्ता स्वरूप बनना है, उस रूप को इमर्ज किया। जैसे साकार ब्रह्मा और सम्पूर्ण ब्रह्मा दोनों के अन्तर को देखते और अनुभव करते थे कि पुरुषार्थी और सम्पूर्ण में क्या अन्तर है। ऐसे आज बच्चों के अन्तर को देख रहे थे। दृश्य बहुत अच्छा था। **नीचे तपस्वी पुरुषार्थी रूप और ऊपर खड़ा हुआ फ़रिश्ता रूप। अपना-अपना रूप इमर्ज कर सकते हो? अपना सम्पूर्ण रूप दिखाई देता है?** सम्पूर्ण ब्रह्मा और सम्पूर्ण ब्राह्मण।

फ़रिश्ते अर्थात् साकार बाप को फ़ालो करने वाले

जैसे भाग्य में आने को आगे करते हो, वैसे त्याग में 'पहले मैं'। जब त्याग में हरेक ब्राह्मण-आत्मा 'पहले मैं' कहेगा तो भाग्य की माला सबके गले में पड़ जायेगी। **आपके सम्पूर्ण स्वरूप सफलता की माला लेकर आप पुरुषार्थियों को गले में डालने के लिए नज़दीक आ रहे हैं। अन्तर को मिटा दो। हम सो फ़रिश्ता का मन्त्र पक्का कर लो** तो साइन्स का यन्त्र अपना काम शुरू करे और हम सो फ़रिश्ते से हम सो देवता बन नई दुनिया में

अवतरित होंगे। ऐसे साकार बाप को फ़ालो करो। साकार को फ़ालो करना तो सहज है ना? तो सम्पूर्ण फ़रिश्ता अर्थात् साकार बाप को फ़ालो करना।

फरिश्ते अर्थात् बापदादा समान और सम्पन्न

आज हरेक बच्चे का डबल स्वरूप देख रहे हैं। कौन-सा डबल रूप? एक वर्तमान पुरुषार्थी स्वरूप, दूसरा वर्तमान जन्म का अन्तिम सम्पूर्ण फ़रिश्ता स्वरूप। इस समय 'हम सो, सो हम' के मन्त्र में पहले हम सो फ़रिश्ता हैं फिर भविष्य में हम सो देवता हैं। इस समय सभी का लक्ष्य पहले फ़रिश्ता स्वरूप, फिर देवता रूप है। आज वतन में, सभी बच्चों के नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार, जो अन्तिम फ़रिश्ता स्वरूप बनना है, उस रूप को इमर्ज किया। जैसे साकार ब्रह्मा और सम्पूर्ण ब्रह्मा दोनों के अन्तर को देखते और अनुभव करते थे कि पुरुषार्थी और सम्पूर्ण में क्या अन्तर है। ऐसे आज बच्चों के अन्तर को देख रहे थे। दृश्य बहुत अच्छा था। **नीचे तपस्वी पुरुषार्थी रूप और ऊपर खड़ा हुआ फ़रिश्ता रूप। अपना-अपना रूप इमर्ज कर सकते हो? अपना सम्पूर्ण रूप दिखाई देता है?** सम्पूर्ण ब्रह्मा और सम्पूर्ण ब्राह्मण।

फ़रिश्ते अर्थात् सफेद वस्त्रधारी और सफेद लाइटधारी

आगे चल समय और आत्माओं की इच्छा की **आवश्यकता अनुसार डबल रूप के सेवा की आवश्यकता होगी। एक ब्रह्माकुमार-कुमारी स्वरूप अर्थात् साकारी स्वरूप की, दूसरी सूक्ष्म आकारी फ़रिश्ते स्वरूप की। जैसे ब्रह्मा बाप की दोनों ही सेवायें देखी। साकार रूप की भी, और फ़रिश्ते रूप की भी।** साकार रूप की सेवा से अव्यक्त रूप के सेवा की स्पीड तेज़ है। यह तो जानते हो, अनुभवी हो ना? अब अव्यक्त ब्रह्मा बाप अव्यक्त रूपधारी बन अर्थात् फ़रिश्ता रूप बन बच्चों को अव्यक्त फ़रिश्ते स्वरूप की स्टेज में खींच रहे हैं। फॉलो फादर करना तो आता है ना! ऐसे तो नहीं सोचते हम भी शरीर छोड़ अव्यक्त बन जावें। इसमें फॉलो नहीं करना। ब्रह्मा बाप फ़रिश्ता बना ही इसलिए कि अव्यक्त रूप का एग्जैम्पुल देख फॉलो सहज कर सको। साकार रूप में न होते हुए भी फ़रिश्ते रूप से साकार रूप समान ही साक्षात्कार कराते हैं ना। विशेष विदेशियों को अनुभव है। मधुबन में साकार ब्रह्मा की अनुभूति करते हो ना! कमरे में जा करके रूह-रूहान करते हो ना! चित्र दिखाई देता है या चैतन्य दिखाई देता है? अनुभव होता है तब तो जिगर से कहते हो ब्रह्मा बाबा। आप सबका ब्रह्मा बाबा है या पहले वाले बच्चों का ब्रह्मा बाबा है? अनुभव से कहते हो वा नालेज के आधार से कहते हो? अनुभव है? **जैसे अव्यक्त ब्रह्मा बाप साकार रूप की पालना दे रहे हैं, साकार रूप की पालना का अनुभव करा रहे हैं, वैसे आप व्यक्त में रहते अव्यक्त फ़रिश्ते रूप का अनुभव करो। सभी को यह अनुभव हो कि यह सब फ़रिश्ते कौन हैं और कहाँ से आये हुए हैं!** जैसे अभी चारों ओर यह आवाज़ फैल रहा है कि यह सफेद वस्त्रधारी कौन हैं और कहाँ से आये हैं! वैसे चारों ओर अब फ़रिश्ते रूप का साक्षात्कार हो। इसको कहा जाता है डबल सेवा का रूप। सफेद वस्त्रधारी और सफेद लाइटधारी। जिसको देख न चाहते भी आँख खुल जाए। **जैसे अन्धकार में कोई बहुत तेज़ लाइट सामने आ जाती है तो अचानक आँख खुल जाती है ना कि यह क्या है, यह कौन है, कहाँ से आई! तो ऐसे अनोखी हलचल मचाओ। जैसे बादल चारों ओर छा जाते हैं, ऐसे चारों ओर फ़रिश्ते रूप से प्रगट हो जाओ। इसको कहा जाता है– आध्यात्मिक जागृति।** इतने सब जो देश-विदेश से आये हो, ब्रह्माकुमार-कुमारी स्वरूप की सेवा की! अवाज़ बुलन्द करने की जागृति का कार्य किया! संगठन का झण्डा

लहराया। अब फिर नया प्लैन करेंगे ना! जहाँ भी देखें तो फ़रिश्ते दिखाई दें, लण्डन में देखें, इण्डिया में देखें जहाँ भी देखें फ़रिश्ते-ही-फ़रिश्ते नजर आयें। .

फरिश्ते अर्थात् सदा देही-अभिमानी

अपने को सदा बाप की याद की छत्रछाया के अन्दर अनुभव करते हो? जितना-जितना याद में रहेंगे उतना अनुभव करेंगे कि मैं अकेली नहीं लेकिन बाप-दादा सदा साथ हैं। **कोई भी समस्या सामने आयेगी तो अपने को कम्बाइन्ड अनुभव करेंगे, इसलिए घबरायेंगे नहीं। कम्बाइन्ड रूप की स्मृति से कोई भी मुश्किल कार्य सहज हो जायेगा। कभी भी कोई ऐसी बात सामने आवे तो बाप-दादा की स्मृति रखते अपना बोझ बाप के ऊपर रख दो तो हल्के हो जायेंगे।** क्योंकि बाप बड़ा है और आप छोटे बच्चे हो। बड़ों पर ही बोझ रखते हैं। बोझ बाप पर रख दिया तो सदा अपने को खुश अनुभव करेंगे। फ़रिश्ते के समान नाचते रहेंगे। दिन-रात २४ ही घंटे मन से डाँस करते रहेंगे। देह-अभिमान में आना अर्थात् मानव बनना। देही-अभिमानी बनना अर्थात् फ़रिश्ता बनना। **सदैव सवेरे उठते ही अपने फ़रिश्ते स्वरूप की स्मृति में रहो और खुशी में नाचते रहो तो कोई भी बात सामने आयेगी उसे खुशी-खुशी से क्रास कर लेंगे। जैसे दिखाते हैं देवियों ने असुरों पर डाँस किया। तो फ़रिश्ते स्वरूप की स्थिति में रहने से आसुरी बातों पर खुशी की डाँस करते रहेंगे। फ़रिश्ते बन फ़रिश्तों की दुनिया में चले जायेंगे। फ़रिश्तों की दुनिया सदा स्मृति में रहेगी।**

फ़रिश्ते अर्थात् फ़्लाईंग सॉसर जैसे चारों ओर दिखाई पड़ने वाले

सब अच्छी सेवा कर रहे हो लेकिन अभी और भी सेवा में, मनसा सेवा पॉवरफुल कैसे हो, इसका विशेष प्लैन बनाओ। वाचा के साथ-साथ मनसा सेवा भी बहुत दूर तक कार्य कर सकती है। ऐसे अनुभव होगा **जैसे आजकल फ़्लाईंग सॉसर देखते हैं वैसे आप सबका फ़रिश्ता स्वरूप चारों ओर देखने में आयेगा और अवाज़ निकलेगा कि यह कौन हैं जो चक्र लगाते हैं। इस पर भी रिसर्च करेंगे।** लेकिन आप सबका साक्षात्कार ऊपर से नीचे आते ही हो जायेगा और समझेंगे यह वही ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ हैं जो फ़रिश्ते रूप में साक्षात्कार करा रही हैं। अभी यह धूम मचाओ। अन्त:वाहक शरीर से चक्र लगाने का अभ्यास करो। ऐसा समय आयेगा जो प्लेन भी नहीं मिल सकेगा। ऐसा समय नाजुक होगा तो आप लोग पहले पहुँच जायेंगे। **अन्त:वाहक शरीर से चक्र लगाने का अभ्यास ज़रूरी है। ऐसा अभ्यास करो जैसे प्रैक्टिकल में सब देख कर मिलकर आये हैं। दूसरे भी अनुभव करें – हाँ, यह हमारे पास वही फ़रिश्ता आया था। फिर ढूँढने निकलेंगे फ़रिश्तों को।** अगर इतने सब फ़रिश्ते चक्र लगायें तो क्या हो जाये? ऑटोमेटिकली सबका अटेन्शन जायेगा। तो अभी साकारी के साथ-साथ आकारी सेवा भी ज़रूर चाहिए। अच्छा – अभी अमृतवेले शरीर से डिटैच हो कर चक्र लगाओ।

फ़रिश्ते अर्थात् अपने फ्युचर द्वारा अन्य आत्माओं के फ्युचर बनाने वाले

सदा अपना फ्युचर सामने रहता है? जितना निमित्त बनी हुई आत्मायें अपने फ्युचर को सदा सामने रखेंगी उतना अन्य आत्माओं को भी अपना फ्युचर बनाने की प्रेरणा दे सकेंगी। अपना फ्युचर स्पष्ट नहीं तो दूसरों को भी स्पष्ट बनाने का रास्ता नहीं बता सकेंगी। **अपना फ्युचर स्पष्ट है? महाराजा या महारानी– जो भी बने, लेकिन उससे**

पहले अपना भविष्य फ़रिश्तेपन का, कर्मातीत अवस्था का– वह सामने स्पष्ट आता है? ऐसा अनुभव होता है कि मैं हर कल्प में फ़रिश्ते स्वरूप में ये पार्ट बजा चुकी हूँ और अभी बजाना है? वो झलक सामने आती है? जैसे दर्पण में अपने स्वरूप की झलक देखते हो ऐसे नॉलेज के दर्पण में अपने पुरुषार्थ से फ़रिश्तेपन की झलक स्पष्ट दिखाई देती है? जब तक फ़रिश्तेपन की झलक स्पष्ट दिखाई नहीं देगी तब तक भविष्य भी स्पष्ट नहीं होगा। यह संकल्प आता ही रहेगा कि शायद मैं ये बनूँ या वो बनूँ? लेकिन फ़रिश्तेपन की झलक स्पष्ट दिखाई देगी तो वह भी स्पष्ट दिखाई देगी। तो वह दिखाई देता है या अभी घूँघट में है? जैसे चित्र का अनावरण कराते हो तो अपने फ़रिश्ते स्वरूप का अनावरण कब करेंगे? आपे ही करेंगे या चीफ़ गेस्ट को बुलायेंगे? **यह पुरुषार्थ की कमज़ोरी का पर्दा हटाओ तो स्पष्ट फ़रिश्ता रूप हो जायेगा।**

फ़रिश्ते अर्थात् अथक और सबकुछ बाप के हवाले करने वाले

सबसे सहज बात कौन-सी है, जिसको समझने से सदा के लिए सहज मार्ग अनुभव होगा? वह सहज बात है सदा अपनी ज़िम्मेदारी बाप को दे दो। ज़िम्मेवारी देना सहज है ना? स्वयं को हल्का करो तो कभी भी मार्ग मुश्किल नहीं लगेगा। मुश्किल तब लगता है जब थकना होता या उलझते हैं। जब **सब ज़िम्मेवारी बाप को दे दी तो फ़रिश्ते हो गये।** फ़रिश्ते कब थकते हैं क्या? लेकिन यह सहज बात नहीं कर पाते तब मुश्किल हो जाता। ग़लती से छोटी-छोटी ज़िम्मेवारियों का बोझ अपने ऊपर ले लेते इसलिए मुश्किल हो जाता। भक्ति में कहते थे– सब कर दो राम हवाले। अब जब करने का समय आया तब अपने हवाले क्यों करते? मेरा स्वभाव, मेरा संस्कार– यह मेरा कहाँ से आया? अगर मेरा खत्म तो नष्टोमोहा हो गये। जब मोह नष्ट हो गया तो सदा स्मृति स्वरूप हो जायेंगे। सब कुछ बाप के हवाले करने से सदा खुश और हल्के रहेंगे। देने में फिराक दिल बनो। अगर पुरानी कीचड़पट्टी रख लेंगे तो बीमारी हो जायेगी।

फ़रिश्ते अर्थात् ज्योति की काया वाले

सभी अपने को ब्राह्मण सो फ़रिश्ता समझते हो? अभी ब्राह्मण हैं और ब्राह्मण से फ़रिश्ता बनने वाले हैं फिर फ़रिश्ता सो देवता बनेंगे –वह याद रहता है? **फ़रिश्ता बनना अर्थात् साकार शरीरधारी होते हुए लाइट रूप में रहना अर्थात् सदा बुद्धि द्वारा ऊपर की स्टेज पर रहना। फ़रिश्ते के पाँव धरनी पर नहीं रहते।** ऊपर कैसे रहेंगे? बुद्धि द्वारा। बुद्धि रूपी पाँव सदा ऊँची स्टेज पर। ऐसे फ़रिश्ते बन रहे हो या बन गये हो? ब्राह्मण तो हो ही – अगर ब्राह्मण न होते तो यहाँ आने की छुट्टी भी नहीं मिलती। लेकिन ब्राह्मणों ने फ़रिश्तेपन की स्टेज कहाँ तक अपनाई है? **फ़रिश्तों को ज्योति की काया दिखाते हैं। प्रकाश की काया वाले। जितना अपने को प्रकाश स्वरूप आत्मा समझेंगे– प्रकाशमय तो चलते फिरते अनुभव करेंगे** जैसे प्रकाश की काया वाले फ़रिश्ते बनकर चल रहे हैं। फ़रिश्ता अर्थात् अपनी देह के भान का भी रिश्ता नहीं, देहभान से रिश्ता टूटना अर्थात् फ़रिश्ता। देह से नहीं, देह के भान से। देह से रिश्ता खत्म होगा तब तो चले जायेंगे लेकिन देहभान का रिश्ता खत्म हो। तो यह जीवन बहुत प्यारी लगेगी। फिर कोई माया भी आकर्षण नहीं करेगी।

फ़रिश्ते अर्थात् बेहद में रहने वाले

सारे ज्ञान का वा इस पढ़ाई के चारों ही सबजेक्ट का मूल सार यही एक बात ''बेहद'' है। बेहद शब्द के स्वरूप में स्थित होना यही फर्स्ट और लास्ट का पुरुषार्थ है। पहले बाप का बनना अर्थात् मरजीवा बनना।

इसका भी आधार है – देह की हद से बेहद देही स्वरूप में स्थित होना और लास्ट में फ़रिश्ता स्वरूप बन जाना है। इसका भी अर्थ है – सर्व हद के रिश्ते से परे फ़रिश्ता बनना। तो आदि और अन्त पुरुषार्थ और प्राप्ति, लक्षण और लक्ष्य, स्मृति और समर्थी दोनों ही स्वरूप में क्या रहा? ''बेहद''। आदि से लेकर अन्त तक किन-किन प्रकार की हदें पार कर चुके हो वा करनी हैं? इस लिस्ट को तो अच्छी तरह से जानते हो ना! जब सर्व हदों से पार बेहद स्वरूप में, बेहद घर, बेहद के सेवाधारी, सर्व हदों के ऊपर विजय प्राप्त करने वाले विजयी रत्न बन जाते तब ही अन्तिम कर्मातीत स्वरूप का अनुभव स्वरूप बन जाते। हद हैं अनेक, बेहद है एक। अनेक प्रकार की हदें अर्थात् अनेक – ''मेरा मेरा''। **एक मेरा बाबा दूसरा न कोई, इस बेहद के मेरे में अनेक मेरा समा जाता है।** विस्तार सार स्वरूप बन जाता है। विस्तार मुश्किल होता है या सार मुश्किल होता है? तो आदि और अन्त का पाठ क्या हुआ? – बेहद। इसी अन्तिम मंज़िल पर कहाँ तक समीप आये हैं, इसको चेक करो। हद की लिस्ट सामने रख देखो कहाँ तक पार किया है!

फ़रिश्ते अर्थात् जिसका धरनी से कोई रिश्ता नहीं

सदा डबल लाइट स्थिति का अनुभव करते हो? डबल लाइट स्थिति की निशानी है – सदा उड़ती कला। उड़ती कला वाले सदा विजयी। उड़ती कला वाले सदा निश्चय बुद्धि, निश्चिन्त। उड़ती कला क्या है? उड़ती कला अर्थात् ऊँचे से ऊँची स्थिति। उड़ते हैं तो ऊँचा जाते हैं ना? ऊँचे ते ऊँची स्थिति में रहने वाली ऊँची आत्मायें समझ आगे बढ़ते चलो। **उड़ती कला वाले अर्थात् बुद्धि रूपी पाँव धरनी पर नहीं। धरनी अर्थात् देह-भान से ऊपर। जो देह-भान की धरनी से ऊपर रहते वह सदा फ़रिश्ते हैं जिसका धरनी से कोई रिश्ता नहीं।** देह-भान को भी जान लिया, देही-अभिमानी स्थिति को भी जान लिया। जब दोनों के अन्तर को जान गये तो देह-अभिमान में आ नहीं सकते। जो अच्छा लगता है वही किया जाता है ना! तो सदा यही स्मृति से सदा उड़ते रहेंगे। उड़ती कला में चले गये तो नीचे की धरनी आकर्षित नहीं करती, ऐसे फ़रिश्ता बन गये तो देह रूपी धरनी आकर्षित नहीं कर सकती।

फ़रिश्ते अर्थात् कर्मातीत अवस्था वाले

आज के दिन सदा अपने को डबल लाइट समझ उड़ती कला का अनुभव करते रहना। कर्मयोगी का पार्ट बजाते भी कर्म और योग का बैलेन्स चेक करना कि कर्म और याद अर्थात् योग दोनों ही शक्तिशाली रहे? अगर कर्म शक्तिशाली रहा और याद कम रही तो बैलेन्स नहीं। और याद शक्तिशाली रही और कर्म शक्तिशाली नहीं तो भी बैलेन्स नहीं। तो कर्म और याद का बैलेन्स रखते रहना। सारा दिन इसी श्रेष्ठ स्थिति में रहने से अपनी कर्मातीत अवस्था के नज़दीक आने का अनुभव करेंगे। **सारा दिन कर्मातीत स्थिति वा अव्यक्त फ़रिश्ते स्वरूप स्थिति में चलते फिरते रहना और नीचे की स्थिति में नहीं आना।** आज नीचे नहीं आना, ऊपर ही रहना। अगर कोई कमज़ोरी से नीचे आ भी जाए तो एक-दो को स्मृति दिलाए समर्थ बनाए सभी ऊँची स्थिति का अनुभव करना। यह आज की पढ़ाई का होम वर्क है। होम वर्क ज़्यादा है, पढ़ाई कम है। बाप का बनना अर्थात् डबल लाइट बनना। क्योंकि बाप के बनते ही सब बोझ बाप को दे दिया। सदा बाप के हो ना! सब कुछ बाप को दे दिया। तन-मन-धन-सम्बन्ध सब कुछ सरेन्डर कर दिया। फिर बोझ काहे का? अभी यही याद रखना – जब सब कुछ बाप का हो गया तो सदा डबल लाइट बन गये।

फ़रिश्ते अर्थात् साक्षात्कार कराने वाले

जैसे अभी गोल्डन जुबली का दृश्य देखा। यह तो एक रमणीक पार्ट बजाया। लेकिन जब फाइनल दृश्य होगा उसमें तो आप साक्षात्कार कराने वाले होंगे या देखने वाले होंगे? क्या होंगे? हीरो एक्टर हो ना! अभी इमर्ज करो वह दृश्य कैसा होगा। इसी अन्तिम दृश्य के लिए **अभी से त्रिकालदर्शी बन देखो कि कैसा सुन्दर दृश्य होगा और कितने सुन्दर हम होंगे। सजे-सजाये दिव्य गुणमूर्त्त फ़रिश्ते सो देवता, इसके लिए अभी से अपने को सदा फ़रिश्ते स्वरूप की स्थिति का अभ्यास करते हुए आगे बढ़ते चलो।** जो चार विशेष सब्जेक्ट हैं– ज्ञान मूर्त्त, निरन्तर यादमूर्त्त, सर्व दिव्यगुणमर्त्त, अथक सेवामूर्त्त– एक दिव्य गुण की भी कमी होगी तो १६ कला सम्पन्न नहीं कहेंगे। १६ कला, सर्व और सम्पूर्ण यह तीनों महिमा हैं। सर्वगुण सम्पन्न कहते हो, सम्पूर्ण निर्विकारी कहते हो और १६ कला सम्पन्न कहते हो। तीनों विशेषतायें चाहिएँ। १६ कला अर्थात् सम्पन्न भी चाहिए, सम्पूर्ण भी चाहिए और सर्व भी चाहिए। तो यह चेक करो। सुनाया था ना कि यह वर्ष बहुतकाल के हिसाब में जमा होने का है फिर बहुतकाल का हिसाब समाप्त हो जायेगा, फिर थोड़ा काल कहने में आयेगा, बहुतकाल नहीं। बहुतकाल के पुरुषार्थ की लाइन में आ जाओ। तभी बहुतकाल का राज्य भाग्य प्राप्त करने के अधिकारी बनेंगे। नहीं तो बहुत काल का राज्य भाग्य बदल कुछ कम राज्य भाग्य प्राप्त होने के अधिकारी बनेंगे।

फ़रिश्ते अर्थात् इच्छा मात्रम अविद्या

जैसे देवताओं के लिए गायन है– इच्छा मात्रम् अविद्या। यह है फ़रिश्ता जीवन की विशेषता। देवताई जीवन में तो इच्छा की बात ही नहीं। ब्राह्मण जीवन सो फ़रिश्ता जीवन बन जाती अर्थात् कर्मातीत स्थिति को प्राप्त हो जाते। किसी भी शुद्ध कर्म वा व्यर्थ कर्म वा विकर्म वा पिछला कर्म, किसी भी कर्म के बन्धन में बंध कर करना– इसको कर्मातीत अवस्था नहीं कहेंगे। एक है कर्म का सम्बन्ध, एक है बन्धन। तो **जैसे यह गायन है– हद की इच्छा से अविद्या, ऐसे फ़रिश्ता जीवन वा ब्राह्मण जीवन अर्थात् 'मुश्किल' शब्द की अविद्या, बोझ से अविद्या, मालूम ही नहीं कि वह क्या होता है! तो वरदानी आत्मा अर्थात् मुश्किल जीवन से अविद्या का अनुभव करने वाली।** इसको कहा जाता है– वरदानी आत्मा। तो बाप समान बनना अर्थात् सदा वरदाता से प्राप्त हुए वरदानों से पलना, सदा निश्चिन्त, निश्चित विजय अनुभव करना।